वार्षिक प्रतिवेदन

2024-25

उद्देश्य, क्षमता, साझेदारी








PARIVARTAN
परिवर्तन

संस्थापक का संदेश



प्रिय साथी,

अभिवादन स्वीकार करें।

परिवर्तन की वर्ष 24-25 की वार्षिक रिपोर्ट साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है। इस बार की रिपोर्ट पिछले वर्षों से कुछ अलग है। इस बार परिवर्तन इकाई के सदस्यों ने आत्म निरीक्षण की प्रक्रिया अपनाई है और परिवर्तन के शुरुआती वर्षों के इतिहास से लेकर आज तक का लेखा जोखा तैयार किया है। इस मायने में यह विशेष रिपोर्ट है।

परिवर्तन की औपचारिक यात्रा 2011 में प्रारंभ हुई थी। जिसके बाद इकाइयों के गठन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। अपने आसपास के भूगोल को समझते हुए, सामाजिक अवरोधों का सामना करते हुए, जागरूकता के प्रयास करते हुए गाँव नरेंद्रपुर में प्रारम्भिक शुरुआत हुई जो आज 21 ग्राम पंचायतों तक विस्तार पा चुकी है। शिक्षा, खेल, रंगमंच, महिला सशक्तिकरण कृषि तथा आजीविका इकाई ने समग्र भाव से समेकित विकास के स्वप्न को आकार देना शुरू कर दिया है।

परिवर्तन की परिकल्पना में अनेक लक्ष्य निर्धारित किए गए थे। कुछ हम हासिल कर पाए कुछ के लिए अभी हमें और प्रयास करना होगा। हमने पहले विस्तार का लक्ष्य तय किया था जिसे हमने परिमार्जित कर गहनता पर केंद्रित किया। अर्थात जहां हमारी कार्ययोजनाएं लागू हों वे गहराई से क्षेत्र में सकारात्मक हस्तक्षेप कर प्रभाव उत्पन्न करें।

हमने क्षेत्र के बच्चों से शुरुआत की और स्कूल करिकुलम के रिक्त हिस्सों को प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर पेडागोजी से भरने का प्रयास किया। क्षेत्र के आंगनवाड़ी केंद्रों के साथ मिलकर नन्हे बच्चों समेत क्षेत्र के स्कूलों के बारहवीं तक के विद्यार्थियों को नवाचारी शिक्षा से जोड़ा। इसके बहुत उत्साहजनक परिणाम दिखलायी पड़ते हैं। परिवर्तन परिसर में स्थित विज्ञानशाला और गणित शाला बच्चों में साइंटिफिक टेम्पर विकसित करने में कामयाब हुई है। और बच्चे प्रगतिशील शिक्षा के प्रति प्रेरित हुए हैं ।

आजीविका इकाई हमारी सबसे नई इकाई है। वैकल्पिक शिक्षा के नवाचार के साथ साथ हुनर प्रशिक्षण एवं रोज़गार के अवसर ने क्षेत्र की महिलाओं को सबलता के नए आयाम दिए हैं। महिला समाख्या ने जागरूकता का पाठ पढ़ाया तो आजीविका ने उसे एक कदम आगे ले जाकर क्षेत्र की महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया है। खेल इकाई ने समुदाय के भीतर स्वस्थ मनोरंजन के साथ साथ रूढ़ियों को खत्म करने का जरूरी कार्य किया है। हमें गर्व है कि क्षेत्र की लड़कियां आज जिला स्तर की फुटबालर, जिला, राज्य एवं राष्ट्र स्तर की साइकिल धावक कबड्डी खिलाड़ी हैं और उत्साह से एथलेटिक्स के हाल ही में शुरू किए गए प्रशिक्षण शिविरों में हिस्सा लेकर राष्ट्र स्तर पर खेलने का स्वप्न देख रही हैं।

रंगमंच के हमारे वयस्क एवं बाल कलाकारों ने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के नाट्य उत्सवों में हिस्सेदारी की है और क्षेत्र को एक नई कलात्मक बयार से ताज़ा कर दिया है। यहाँ तैयार नुक्कड़ नाटक न सिर्फ लोगों का अभूतपूर्व मनोरंजन करते हैं बल्कि चेतना को जागृत करने और मुश्किल सवालों को उठाने को उकसाते हैं। नाटक देखते देखते कई बार दर्शक राजनैतिक सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं के हल भी खुद ही सुझा देते हैं।यह प्रतिक्रिया हमारे लिए अत्यंत सुखद होती है क्योंकि याद आता है कैसे रंगमंडली के गठन के समय हमारे रंगमंडली के संचालक आशुतोष जी को घर घर जाकर रंगमंच की उपयोगिता और सार्थकता को समझाना पड़ा था तब जाकर लगभग आधे मन से लोगों ने अपनी बेटियों को रेपर्टोरी का हिस्सा होने की अनुमति दी थी।

उतना ही कठिन था, महिला समाख्या में सहायिकाओं को प्रेरित कर महिलाओं के हक़ अधिकार के बारे में जागरूक करना और उन्हें अपने इस अभियान से जोड़ना। लेकिन आज यह देखना सुखद लगता है कि क्षेत्र की अनेक महिलाएं स्वेच्छा से परिवर्तन से जुड़ रही हैं। आजीविका की महिलाओं ने तो क्षेत्र में नया इतिहास लिखना शुरू कर दिया है। वे लोन लेकर अथवा अपने द्वारा अर्जित पगार से साइकिल खरीद रही हैं और घर से अपने कार्यस्थल तक स्वयं ही आना जाना कर रही हैं।

एक और चुनौतीपूर्ण क्षेत्र जिसने आश्चर्यजनक रूप से विकास किया है वह कृषि का क्षेत्र है। परिवर्तन के कृषि ज्ञान केंद्र ने आधुनिक तकनीक एवं कृषि साहित्य उपलब्ध करवाकर स्थानीय खेती को एक लाभकारी उद्यम में बदल दिया है। खेती में हुए नुकसानों की वजह से खेतिहारों का व्यापक पलायन रुक गया है और लोग प्रायोगिक खेती कर खुशहाल ज़िंदगी जी रहे हैं।

यह बदलाव देखना हमारे लिए कितना आश्वस्तकारी है कि इसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है।अभी आगे और जाने में बहुत वक्त लगने वाला है। चुनौतियाँ भी बहुत सारी हैं जिसमें सबसे बड़ी चुनौती विकास की रफ्तार को कायम रखना है। लेकिन मुझे विश्वास है कि समुदाय एवं परिवर्तन की पूरी टीम की साझेदारी से हम अपने रास्ते पर आगे बढ़ते जाएंगे।

इस यात्रा के पिछले पड़ावों की झलक इस रिपोर्ट में दर्ज हैं। परिवर्तन टीम को इस सुंदर एवं समग्र रिपोर्ट तैयार करने के लिए बहुत धन्यवाद एवं आगे की विकासशील यात्रा के लिए अनेक शुभकामनाएं!

संजीव कुमार

आपका

संजीव कुमार



विषय सूचि

कृषि	2
शिक्षा	9
सामुदायिक खेल	24
सामुदायिक रंगमंच	32
महिला सशक्तिकरण	40
आजीविका	46
परिवर्तन प्रकाशन	54
परिवर्तन ने दिए सफलता के आयाम	55
अतिथियों के नोट्स	57
परिवर्तन के अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम	58
मीडिया कवरेज	60

कृषि

12 वर्षों की यात्रा

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र



परिवर्तन संस्थान की स्थापना, ग्रामीण विकास पर आधारित संस्थान के रूप में की गयी थी। इस आधार पर कृषि को प्रमुखता से केंद्र में रखते हुए, किसान समुदाय एवं कृषि व्यवसाय को व्यवहारिक रूप से अधिक लाभकारी बनाने के लिए कृषि इकाई के विशिष्ट स्तम्भ- हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र की स्थापना सत्र 2013 में हुई। यह इकाई क्षेत्र के किसानों को तकनीकी जानकारी प्रेषित करने और समय एवं आवश्यकता अनुसार सहयोग करने के लिए सक्षम की गयी जिससे किसान समुदाय की आकाँक्षाये पूरी हों और उनके जीवन की गुणवत्ता में परिवर्तनकारी बदलाव आए। फलतः इससे कृषि क्षेत्र में संपन्नता की बढ़ोत्तरी होगी और भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनेगी।

हमारी सोच

1

ग्रामीण क्षेत्र में कृषि, आजीविका का मुख्य स्रोत होने के बावजूद अत्यंत विषम, चुनौती भरा, दुष्कर कार्य है।

2

परिवर्तन कार्यक्षेत्र के कृषकों के लिए लगातार पड़ने वाले सूखे, औचक जलवायु परिवर्तन, उच्च इनपुट लागत और सीमांत लाभ, अपर्याप्त सिंचाई, छोटे और खंडित जोत, तकनीकी हस्तक्षेप की कमी सतत रूप से कृषि को घाटे का सौदा बनाती रही है।

3

लोग खेतीबाड़ी छोड़कर आय के अन्य विकल्पों की तलाश में इधर उधर भटकते रहे हैं।

4

इसी वजह से समेकित सामुदायिक विकास की भावना रखने वाली परिवर्तन संस्था को कृषि के क्षेत्र में भी कार्य करने और कृषि सुधार की पहल करने की आवश्यकता दिखलाई पड़ी।

हरियाली कृषि ज्ञान केन्द्र की स्थापना के उपरांत इसके तत्काल संचालन में चुनौतियों का सामना करना पड़ा था;

चुनौतियां

- किसानों को संगठित कर परिवर्तन की सोच में समाहित कर कृषि विकास को बढ़ावा देना।
- उन्हें सफलता का विश्वास दिलाना बड़ा ही कठिनाई भरा काम होता था।
- कृषि के अन्य संस्थानों और विभागों के साथ परिवर्तन कृषि इकाई को जोड़ना जो अत्यंत कठिनाई भरा था।
- पारम्परिक खेती करने वाले किसान नई पद्धति और नई फसलों एवं बीजों के साथ खेती करने में हिचकते थे।
- कार्यक्षेत्र के किसान खेती में लगातार हो रहे घाटे से ऊब चुके थे और कोई भी नया प्रयोग करने से कतरा रहे थे।
- वे आय के अन्य विकल्पों की तलाश में रहते थे।
- अतः उन किसानों को पुनः खेती से साथ जोड़ना हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र की बड़ी चुनौतियों में से एक था।

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र इकाई का काम किसानों में जागरूकता, किसान चौपाल, किसान कल्ब एवं किसान संगठन, कार्यशाला, प्रशिक्षण, फार्मर फील्ड डे, सहभागी प्रजाति चयन, यंत्रीकरण को बढ़ावा, फसल विविधिकरण, मशरूम उत्पादान, उचित बाजार उपलब्धता, समेकित खरपतवार एवं पोषक प्रबन्धन, समुचित संसाधन उपयोगिता, दलहन की खेती को बढ़ावा, वैज्ञानिक विधि से खेती कर अधिक उत्पादन, तकनीकी ज्ञान प्रदान करना है ।



पहल एवं प्रयास

- किसानों को संगठित एवं जागरूक करना।
- कृषि लागतों में कमी करते हुए, अधिक उत्पादन और तकनीकी ज्ञान के माध्यम से खेती- बाड़ी को अधिक लाभकारी बनाना।
- किसान समुदाय को समय- समय पर तकनीकी ज्ञान और प्रशिक्षण देकर उनके कौशल ज्ञान में वृद्धि करना जिससे किसान आत्मनिर्भर होकर खेती कर सकें।
- हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के माध्यम से कार्यक्षेत्र के किसानों तक सभी संसाधनों की पहुँच को बढ़ाया गया।
- किसान खेती करने योग्य जरूरतों को पूरा कर सकने में सक्षम हों तथा छोटे एवं मझोले किसान पूरे वर्ष सुरक्षित, किफायती और पौष्टिक आहार का समतापूर्ण उपभोग एवं उत्पदान कर सकें।
- उनकी घरेलू आय में वृद्धि हो पाए।
- कार्यक्षेत्र के किसानों को संगठित कर सहकारिता का विकास किया गया।
- उनके उत्पादन को बिचौलियों से दूर कर एक बेहतर बाज़ार को उपलब्ध कराया गया जिससे किसान के उत्पाद को सही दाम की प्राप्ति हो।
- विभिन्न गतिविधियों और पहल के माध्यम से हस्तेक्षप कर किसानों को आत्मनिर्भर, सशक्त और समाजिक- आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए प्रयास किये गये।
- परम्परागत कृषि को जलवायु अनुकूल में बदलना एवं कृषि में टिकाऊ पद्धतियों को को अपनाने के लिए अनेक कदम उठाए गए।
- पिछले कुछ वर्षो के दौरान किये गए प्रयास के शुरूआती चरण थे।



पहल

परिवर्तन किसान मेला

किसान मेला 10 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है।

इस किसान मेले में कृषि प्रदर्शनी के साथ साथ किसान गोष्ठी का भी आयोजन किया जाता है ।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 11 फरवरी 2025 को परिवर्तन परिसर में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ एक दिवसीय किसान मेला सह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। मेले में जिले भर से 20000 से अधिक किसान और सैकड़ो से अधिक कृषि प्रतिष्ठानों की सहभागिता रही।

01

जलवायु अनुकूल खेती, फसल विविधकरण, जैविक खेती, जलघुलनशील उर्वरक, कृषि में यंत्रीकरण, पर क्रमशः कृषि विशेषज्ञों द्वारा किसानों के साथ सीधा संवाद और चर्चा परिचर्चा हुई।

02

मेले में कृषि प्रतिष्ठानों द्वारा उन्नत बीज, दवायें, यंत्रों को प्रदर्शनी और लीफलेट देकर किसानों को जानकारिया उपलब्ध कराई गयी।



कार्यशाला- किसान को नई पद्धतियों और तरीकों को सीखने का मौका

परिवर्तन संस्था अपने किसानों के क्षमता निर्माण हेतु हर वर्ष के दो प्रमुख सीजन- खरीफ और रबी कार्यशाला का आयोजन करती है जिसमें किसानों को सीजन अनुसार वैज्ञानिक खेती की जानकारी और नई बुआई पद्धतियों पर प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही सीजन में आने वाली समस्याओं पर सामूहिक चर्चा की जाती है। इस कार्यशाला में खेती की सिंचाई पद्धति में सुधार तथा सिंचाई व्यवस्था के साथ साथ वर्षा जल संरक्षण के उपायों के ऊपर चर्चा परिचर्चा होती है।

इस किसान मेले में मुख्य आकर्षण;

- यंत्रीकरण को बढ़ावा देने हेतु मेला में ट्रेक्टर रैली निकाली गयी
- नैनो उर्वरकों के छिड़काव के लिए किसानों के बीच ड्रोन मशीन का सजीव प्रदर्शन
- समूह की महिलाओं द्वारा बने उत्पाद का प्रदर्शन
- प्रतिष्ठानों द्वारा कृषि इनपुट
- परिवर्तन FPO द्वारा आये हुए किसानों को मोटे अनाज, - सँवा की खीर खिलाई गयी
- मेले में आये हुए किसानों द्वारा कृषि जानकारी और नवाचार के साथ - साथ कृषि इनपुट, पेड़ पौधे नर्सरी, हाथ से बने उत्पाद आदि की खरीदारी

पहल

परिवर्तन पोषण वाटिका (PNG) कार्यक्रम

परिवर्तन क्षेत्र में समुदाय के खानपान में पोषण युक्त भोजन का अभाव देखने को मिलता है। आजकल बाजार में बिकने वाली चमकदार फल सब्जियों को रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कर के उगाया जाता है। रसायनों का इस्तेमाल खरपतवार, कीड़ो व् बीमारियों को रोकने के लिए किया जाता है लेकिन इन रासायनिक दवाओं का कुछ अंश फल सब्जी में बाद तक बना रहता है, जिसके कारण उन्हें इस्तेमाल करने वालों में बीमारियाँ से लड़ने की ताकत कम होती है। इसी सन्दर्भ में हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र परिवर्तन ने एक पहल की है - जरुरतमंद समुदाय परिवार अपने घर के आसपास की खाली पड़ी जमीन पर एक पोषण वाटिका का निर्माण करे और अपने भोजन में सही पोषण सामग्री का समावेश कर, स्वस्थ्य समुदाय का निर्माण करे। इसके अतिरिक्त इस पहल के अंतर्गत, महिला समूहों की जरूरतमंद महिलाओं को कृषि के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक रूप से मजबूत करना तथ महिलाओं की अशिक्षा, अनभिज्ञता, उदासीनता और अन्धविश्वास को दूर करने का प्रयास भी करना।

महिला समूह की महिलाओं की पहचान कर उन्हें घर के आसपास की जगह पर पोषण वाटिका निर्माण में तकनीकी सहयोग दिया गया। जिससे वे अपनी प्राथमिक जरूरतों, - शाग-सब्जी में लगने वाले खर्च में कमी कर अपनी अन्य जरूरतों को पूरा कर सकें। अभी तक 5 महिला समूहों के साथ जुड़कर, उन्हें खेतीबाड़ी से जोड़ कर आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया है।

इस प्रक्रिया को आगे और विस्तार दिया जाएगा।

समुदाय में स्थापित पोषण वाटिका –

क्र.स.	वर्ष	लाभार्थी संख्या
1	2020-21	63
2	2021-22	80
3	2022-23	120
4	2023-24	100
5	2024-25	67

सफल स्कूल व् ICDS में पोषण वाटिका का निर्माण -

क्र.स.	पंचायत	स्कूल / ICDS
1	भरौली	भरौली मध्य विद्यालय भरौली
2	जामापुर	ICDS रुइया
3	नरेन्द्रपुर	ICDS बडहुलियाँ
4	मिया भटकन	ICDS नारायणपुर
5	बलिया	उच्च मध्य विद्यालय उजैन बंगरा

महिला समूह में पोषक वाटिका का निर्माण -

क्र. स.	समूह का नाम / ग्राम	पंचायत	लाभन्वित महिला संख्या
1	माँ काली समूह बड़हुलिया गरवारा	नरेन्द्रपुर	4
2	रौशन समूह मियां भटकन शर्मा टोला	मिया भटकन	4
3	गुलाब समूह नरेन्द्रपुर	नरेन्द्रपुर	4
4	मधुबाला समूह भरौली	भरौली	2
5	खाद्य सुरक्षा समूह बंथू श्रीराम	गांगौली चंदौली	6
	कुल		20









बदलाव

किसानों ने राजमा को नगदी फसल के रूप में अपनाया

परिवर्तन कार्यक्षेत्र में बहुत पहले नगदी फसल के रूप में गन्ना की खेती को माना जाता रह है। लेकिन चीनी मिलों के बंद हो जाने के कारण यहाँ पर नगदी फसल का आभाव बना हुआ था किसान सिर्फ धान-गेहूँ की खेती ही करते थे जिससे खास आमदनी की प्राप्ति नहीं होती थी। परिवर्तन ने 2018 से अपने कार्यक्षेत्र में एक नगदी फसल को बढ़ावा देने हेतु अनेक गैर पारम्परिक फसलों(सोयाबीन, सूरजमुखी, राजमा, खरीफ प्याज,) का प्रदर्शन किसानों के खेत पर आयोजित करना शुरू किया। जिसमें से 2019 से राजमा की खेती किसानों द्वारा पसंद की गयी क्योंकि मौसम के उतार चढ़ाव के बावजूद राजमा, लाभकारी फसल बना रहा।









परिवर्तन कृषि इकाई का तकनीकी हस्तक्षेप –

01 परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र ने राजमा की फसल में अनुशंसित खेती के पैकेज को अपनाने में किसानों की मदद की।

02 1.5 KG / कठ्ठा बीज का उपयोग कराया गया।

03 इन क्षेत्रो के परिवारों को अपनाने में पारम्परिक फसल की तुलना में इस नयी फसल के उत्पादन में आकर्षक लाभ मिल रहा है।

04 किसानों के खेत पर प्रदर्शन का आयोजन किया गया।

05 राजमा की हल्की सिंचाई पर ध्यान रखा गया।

06 खाने में स्वादिष्ट और सुपाच्य है।

07 किसानों को राजमा की बुवाई लाइन से करने की सलाह दी गयी।

08 पत्ती पीली होने पर नैनो नाईट्रोजन का छिड़काव कराया गया।

09 कम समय में फसल पक कर तैयार हो जा रही है।

बदलाव

परिवर्तन और किसानों के संयुक्त प्रयासों के परिणाम स्वरूप और भी क्षेत्रो में राजमा की खेती बढ़ती जा रही है।

अनुकूल मौसम की वजह से राजमा के व्यवसायिक उत्पादन की सम्भावना बढ़ेगी।



दलहनी फसलों से भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पोषण प्रणाली में सुधार

परिवर्तन कार्यक्षेत्र के गहन अध्ययन के बाद यह नतीजा सामने आया है कि वर्ष 2010 से इस क्षेत्र में बारिश कम होती जा रही है। ऐसे में परिवर्तन की सोच बनी की किसानों को कम पानी चाहने वाली फसल को बढ़ावा देना चाहिए और दलहनी फसलों की खेती एक अच्छा विल्कप हो सकता है। दलहनी फसलें प्रोटीन का सस्ता एवं सुलभ स्रोत हैं।

परिवर्तन कृषि इकाई द्वारा जब कार्यक्षेत्र में दलहन की खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किया गया तो यह प्रयास इतना आसान नहीं था क्यों किसानों के सामने अनेक चुनौतिया भरी पड़ी थीं;



बदलाव



अतः परिवर्तन संस्था ने अपने कार्यक्षेत्र में इन समस्याओं की पहचान कर खेती में दलहन फसलों को बढ़ावा देने के लिए किसान परिवारों के साथ बैठक कर दलहन फसल को बढ़ाने हेतु साझा योजना बनाईं।

वर्ष 2014 में परिवर्तन कृषि इकाई द्वारा 15 किसानों के खेत पर दलहनी फसलों की नई प्रजातियों एवं रेज्ड बेड प्लान्टर तकनीक से 4 एकड़ की खेती शुरू कारवायी गयी, जिसमें किसानों को परम्परागत की तुलना में तीन से चार गुना अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ।आज 300+ किसानों द्वारा 200 एकड़ से अधिक क्षेत्रों अरहर, चना, मसूर की खेती की जा रही हैं।

इन किसानों को परिवर्तन संस्था के कृषि विशेषज्ञ द्वारा नियमित तकनीकि ज्ञान और फसल सुरक्षा की जानकारी प्रदान की गयी, साथ- साथ किसानों को परिवर्तन किसान सेवा केंद्र से सही बीज, मेंढ़ पर बुआई के लिए रेज्डबेड प्लान्टर मशीन, फल छेदक दवा भी उपलब्ध कराई गयी। संस्था के प्रयास से जीरादेई के किसानों ने दलहनी फसलों (अरहर, चना, मसूर) की खेती को फिर से अपना लिया हैं। परिवर्तन के तकनीकी सहयोग से अरहर, चना, मसूर की खेती लोगों को लुभा रही है। साल दर साल किसानों ने दलहन फसलों को लगाने की संख्या बढ़ती जा रही है। दलहनी फसलों को किसानों को अपनाने से खेत की उर्वरता में भी बढ़ोतरी हो रही है और आय में वृद्धि हो रही है।

अतः कहा जा सकता है कि कार्यक्षेत्र का किसान अब अधिक आत्मविश्वास से विकास की राह पर चल पड़ा है।

विवेक कुमार - कृषि संचालक

शिक्षा

12 वर्षों की यात्रा

हमारी सोच



शिक्षा इकाई की स्थापना 2013 में समुदाय में शिक्षा में नवाचार लाने के उद्देश्य से हुई।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूली करिकुलम में अनेक रिक्त स्थान बने हुए हैं, परिवर्तन ने इन स्थानों को समानांतर शिक्षा के माध्यम से भरने का प्रयास किया है।

इसके तहत परिवर्तन शिक्षा इकाई ने अपनी स्थापना से 12 वर्षों की अपनी यात्रा में समुदाय की ज़रूरतों को समझते हुए समुदाय की भागीदारी से शिक्षा इकाई के अंतर्गत अनेक उप-इकाइयाँ विकसित की हैं जिससे समुदाय के सभी वर्गों के बच्चे लाभान्वित हो सकें।

परिवर्तन बालघर आंगन 2013 में प्रारम्भ हुआ।

बालघर आँगन

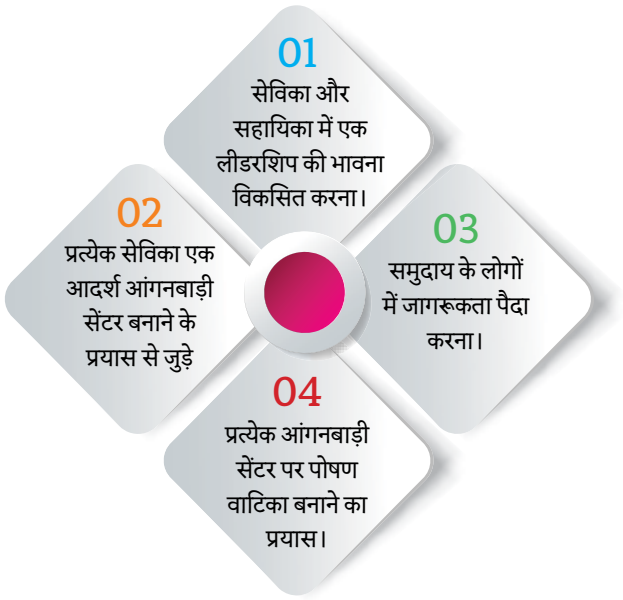
इसके अंतर्गत प्री स्कूल में पढ़ने वाले आदर्श बच्चों के निर्माण हेतु नियमित पठन पाठन करने की सोच बनी।

पहल एवं प्रयास

- आरम्भ से पहले मुझे ट्रेनिंग के लिए जोड़ो ज्ञान एजूकेशन सेंटर दिल्ली भेजा गया जिसमे 18 दिन की ट्रेनिंग हुई।
- ट्रेनिंग से आने के बाद बालघर आंगन में क्लास होने लगी।
- सीखने की क्षमता सबसे ज्यादा छोटे बच्चों में होती है।
- समुदाय में 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए आंगनबाड़ी की व्यवस्था है।
- यह उतनी प्रभावशाली नहीं थी जिससे बच्चों का समग्र विकास हो सके।
- इसी लिए परिवर्तन बालघर आंगन इकाई की स्थापना की गयी।
- बच्चों में अलग-अलग टूल्स के माध्यम से शारीरिक, मानसिक, समाजिक एवं संज्ञात्मक विकास हो सके इसका प्रयास किया गया।
- कुछ चयनित बच्चों को परिवर्तन बुलाकर टेस्टिंग टूल्स द्वारा प्रारंभिक प्रशिक्षण दिया गया।
- बच्चो को जब हम परिवर्तन लेकर आए तो उन बच्चों के साथ कुछ प्रक्रियाएं की गईं।
- बच्चों में हम क्या-क्या बदलाव देखना चाहते हैं, इसपर विचार किया गया।



- बच्चों का चयन करके टूल्स के हिसाब से उनके पठन पाठन को सुनिश्चित किया गया।
- एक करिकुलम बनाया गया।
- करिकुलम बहुत सोच-विचार और मंथन के साथ बनाया गया।
- इस करिकुलम में उनके शारीरिक, मानसिक और संज्ञात्मक विकास पर बल दिया गया।
- उस करिकुलम के अनुसार, शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गई।
- प्रत्येक बैच छः माह का होगा।
- बैच समाप्त होने पर बच्चे अपने आँगनबाड़ी केंद्र पर जाकर रोल मॉडल बनकर अन्य बच्चो को प्रेरित करेंगे।
- 6 माह पूरा होने के बाद बच्चे अपने केंद्र पर जाएं तो सेविका और अभिभावक यह देख पायें कि बच्चों में किस प्रकार का बदलाव आया है।
- टूल्स और करिकुलम बनाने के लिए पटना D.P.S. स्कूल के शिक्षकों का सहयोग, प्रथम का सहयोग तथा जोड़ो ज्ञान एजुकेशन सेंटर दिल्ली का सहयोग मिला।



चुनौतियां



बदलाव

- इस प्रयास से बच्चे और आंगनबाड़ी केंद्र मजबूत और सुदृढ बने।
- बालघर आँगन का कार्यक्रम पहले 4 आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ शुरू किया गया था।
- 4 केन्द्रों से लगभग 20 से 22 बच्चों को प्रतिदिन परिवर्तन लाना और उन बच्चों के साथ क्लास कराकर फिर उन्हें वापस आंगनबाड़ी सेंटर छोड़ना शिक्षा ईकाई की ही ज़िम्मेदारी होती है जो वह सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है।
- इस तरह एक साल बच्चों को लाना और आंगनबाड़ी तक छोड़ना हम तीन लोगों का काम था, प्रियंका मियां भटकन, आरती नारायणपुर, और मैं नरेन्द्रपुर से।
- बालघर आंगन के बच्चों के लिए अब वैन आने लगी है।
- शुरू में 4 केन्द्रों के साथ क्लास का आयोजन हुआ।
- अब लगभग 52 केन्द्रों के साथ बालघर आंगन का काम चल रहा है।



आंगनबाड़ी केंद्र को आदर्श बनाने के लिए सेविकाओं के लिए उन्नत टीचिंग सामग्री की उपयोगिता पर प्रशिक्षण

परिवर्तन बालघर आंगन अपने कोर एरिया के 52 आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ कार्यरत है। पिछले 10 वर्षो से सेविकाओ को अपने काम के प्रति सुदृढ़ बनाने हेतु प्रयासरत है। उसके लिए सेविका प्रशिक्षण का आयोजन कर नई - नई गतिविधि को सिखाना तथा उन्हें खुद से कोई भी कहानी का पपेट बनवाने का कौशल विकसित किया जाता है। पहले सेविकाओं कि स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। बहुत सी सेविका न समय से केंद्र खोलती और न ही केंद्र पर पठन पाठन को ध्यान से करवा पाती। पर परिवर्तन बालघर के नियमित जुड़ाव और विजिट के माध्यम से उन सेविकाओं में काफी बदलाव हुआ है। परिवर्तन बालघर से जुड़े आंगनबाड़ी केन्द्रों पर पर एक सर्वे कराया गया। जिसमे तीन स्टेज था,

- *बेस लाईन सर्वे,*
- *मिड लाईन सर्वे*
- *एंड लाईन सर्वे एंड*

इन तीनो सर्वे को तीन-तीन माह के अंतराल में किया गया, तीन माह इस लिए रखा गया की केन्दों पे कितना सुधर हुआ इसका पता चल लग जाय। इस सर्वे के कई मुख्य पहलू थे जैसे :

- *केंद्र पर कितने बच्चे नामांकित है?*
- *केंद्र पर कितने बच्चे उपस्थित थे?*
- *केंद्र पर नियमित भोजन बनता है कि नहीं?*
- *भोजन बनाने का स्थान साफ-सुथरा है कि नहीं?*
- *भोजन बनाने वाली सहायिका साफ-सुथरा है कि नहीं?*
- *भोजन मेन्यु के अनुसार बनता है कि नहीं?*
- *प्रति बच्चे के लिए निर्धारित मात्रा में भोजन मिलता है या नहीं?*
- *केंद्र पर शुद्ध पेय जल है कि नहीं ?*
- *प्रति माह बच्चो का वजन होता है या नहीं ?*
- *विटामिन की खुराक दी जाती है या नहीं ?*

और भी कुछ बिंदु है जिसपर बहुत अच्छे से काम किया गया। तीन माह बाद मिड लाईन सर्वे किया किया फिर तीन माह बाद एंड लाईन सर्वे के द्वारा पता किया गया की केन्द्रों पर कितना सुधार हुआ है। जो केंद्र ज्यादा कमजोर था उसपर ज्यादा कार्य किया गया। और धीरे-धीरे बहुत सुधार देखने को मिला। केंद्र पर पठन-पाठन के लिए एक कार्ययोजना (करिकुलम) बनायी गयी, जिसके अनुसार सेविका पठन-पाठन का कार्य करने लगी। इससे पहले सेविका अपने मन से जो मर्जी था वह पढ़ाती थी, अब सेविका करिकुलम के अनुसार पढ़ाती है जिससे बच्चों में बहुत बदलाव आया है।

सेविकाओं को किसी के सामने अपनी बात रखने में भी परेशानी होती थी पर परिवर्तन द्वारा आयोजित सेविका प्रशिक्षण में भाग लेने और नियमित बालघर से जुड़ाव के बाद सेविका अपनी बात को बड़ी स्पष्टता के साथ रख पा रही है।

बदलाव

- *छोटे-छोटे बालगीत का सस्वर वाचन करने लगी है।*
- *बालघर के नियमित प्रयास से आंगनबाड़ी केंद्र पर कविता-कहानी का पिटारा बन गया है।*
- *केंद्र संबंधित कोई भी समस्या हो तो सेविका बड़े ही आत्म-विश्वास के साथ ऊपर रख पाती है जो पहले कहने में भी हिचकिचाती थी।*
- *इसके साथ ही साथ बहुत से काम ऐसे होते थे जिसके लिए वह अपने पति या अन्य पुरुषों पर आश्रित रहती थी पर अब वह अपना सारा काम खुद से ही करने का प्रयास करती है।*



स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रम 2024

यह कार्यक्रम दिनांक – 2, 7, 8, 9, तथा 12 सितम्बर 2023 तक चला, इसका स्थान- आंगनबाड़ी केंद्र था केंद्र संख्या: 7 (अलग-अलग पंचायत से एक-एक केंद्र)

परिवर्तन के सदस्य: मधुबाला जी, विवेक कुशवाहा और मिथिलेश कुमार थे, और उद्देश्य समुदाय के लोगों को नियमित खानपान में पोषण युक्त खाद्य (संतुलित थाली) सामग्रियों से अवगत कराना था।

पंचायत -7, प्रखंड – 2

मनुष्य का विकास उसकी स्वस्थ्य दिनचर्या से होता है। यह स्वस्थ्य दिनचर्या तभी होगा जब हम प्रतिदिन संतुलित भोजन करें। इस सन्दर्भ में परिवर्तन द्वारा सितम्बर माह में संतुलित भोजन के प्रति कार्य क्षेत्र समुदाय में जागरूकता लाने हेतु 2 सितम्बर से 12 सितम्बर तक स्वास्थ्य और पोषण युक्त जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पोषण सप्ताह का पहला दिन बड़हुलिया और संजलपुर आंगनबाड़ी केंद्र पर आयोजित किया गया। विवेकजी द्वारा परिचय सत्र से कार्यक्रम को शुरू किया गया उसके बाद मेरे द्वारा पोषण के आयाम और संतुलित थाली का प्रदर्शन किया गया जिसमें किशोरियों और महिलाओं को सही पोषण के लिए जागरूक किया गया।इसके साथ ही साथ पोषण वाटिका से लाभ और लगाने के तरीके को बताया गया उसके बाद उसी जगह पर पोषण सम्बन्धित वीडियो को दिखाया गया। वीडियो समाप्त होने के बाद मिथलेश जी द्वारा बिना किसी खर्च के जो आसानी से मिल सके पोषण सम्बन्धित जानकारी दी गई। कुपोषित बच्चे होने के कारण को उदाहरण समेत बताया गया। मिथलेश जी एक–एक बात को उदाहरण के साथ बताते थे। इसके बाद हमारा भोजन कैसा हो उस बिंदु पर बात हुई। आंगनबाड़ी सेंटर पर लगी पोषण वाटिका मे सभी महिलाओं और किशोरियों को पोषण वाटिका दिखायी गई। इसके उपरांत यह कार्यक्रम आगे भी संचालित किया गया।

दिनांक	स्थान
07/09/24	बेद्वालिया और हसनपुरवा आंगनबाड़ी सेंटर पर गोदभराई और पोषण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 60 लोग उपस्थित रहे।
08/09/24	रुईया आंगनबाड़ी सेंटर पर पोषण सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें 28 लोग उपस्थित रहे।
09/09/24	भवराजपुर आंगनबाड़ी सेंटर पर पोषण सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें 25 लोग उपस्थित रहे।
12/09/24	बलिया आंगनबाड़ी सेंटर पर पोषण सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें 26 लोग उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का प्रभाव -

- काफी महिलाओं ने माना कि खाने में हरी साग सब्जियों को कम शामिल करती हैं, वे आगे से इसका भी ख्याल रखेंगी
- जच्चा और बच्चा के ख्याल से महिलायें खाने के प्रति सचेत हुयीं
- महिलाओं ने अपने घर के आस पास पोषक वाटिका निर्माण की बात कही
- हमारे द्वारा संचालित जागरूकता कार्यक्रम को बिहार सरकार के बालविकास मंत्रालय के आफिशियल पेज पर पोस्ट किया गया





मधुबाला देवी - बालघर आँगन संचालक

झरोखा

"डिजिटल ज्ञान से उज्जवल भविष्य की ओर"–झरोखा, कंप्यूटर लैब की पहल

हमारी सोच

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे दुनिया को बदला जा सकता है।"

इसी सोच के साथ झरोखा ने एक ऐसा कदम उठाया, जो आज न जाने कितने बच्चों और युवाओं के जीवन में आशा की किरण बन चुका है।





पहल एवं प्रयास

- जब हमने देखा कि आज की डिजिटल दुनिया में भी कई बच्चे और युवा सिर्फ इसलिए पीछे रह जाते हैं क्योंकि उनके पास संसाधन नहीं हैं, तो हमारे मन में एक सवाल उठा – क्या सिर्फ आर्थिक कमजोरी किसी के सपनों की राह रोक सकती है?
- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों और युवाओं को निःशुल्क कंप्यूटर शिक्षा देने का प्रावधान किया ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और तकनीकी दुनिया से जुड़ सकें।
- छोटे बच्चों के लिए प्रारंभिक क्लासेज़- जिनमें उन्हें कंप्यूटर के मूलभूत ज्ञान जैसे माउस, कीबोर्ड, टाइपिंग, एमएस पेंट, एमएस वर्ड सिखाया जाता है।
- डुओलिंगोआधारित इंग्लिश लर्निंग क्लासेस - ताकि वे डिजिटल दुनिया में बेहतर संवाद कर सकें।
- DCA (Diploma in Computer Applications) और ADCA (Advanced Diploma) कोर्स - युवाओं के लिए पूरी तरह से निःशुल्क किये गये।
- टेस्ट, प्रैक्टिकल सेशन्स और क्विज प्रतियोगिताएं - जिससे बच्चे आत्मविश्वास के साथ सीखें।

बदलाव

आज झरोखा की इस पहल ने सकारात्मक बदलाव उत्पन्न किये हैं:

- बच्चों और युवाओं में डिजिटल शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़ा है।
- अब युवाओं को निःशुल्क कंप्यूटर शिक्षा दी जा रही है ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और तकनीकी दुनिया से जुड़ सकें इससे युवाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है।
- अब समुदाय के लोग भी इस पहल की सराहना करते हैं और बच्चों को प्रेरित करते हैं।

हमारा लक्ष्य

भविष्य की दिशा - हमारा अगला लक्ष्य

- और अधिक बच्चों और युवाओं तक पहुँचना।
- वेब डिज़ाइनिंग, ग्राफिक्स, डिजिटल मार्केटिंग जैसे नए कोर्स जोड़ना।
- हर बच्चा बने डिजिटल भारत का सशक्त नागरिक।

झरोखा संचालक

विज्ञानशाला : 10 वर्षों की यात्रा

विज्ञान एवं वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से परिवर्तन परिसर में विज्ञानशाला की स्थापना 2014 में हुई।

हमारी सोच

- परिवर्तन विज्ञानशाला का प्रयास रहा है कि वह विज्ञान की सैद्धांतिक बातों को प्रयोग, परीक्षण, अनुसंधान एवं छोटे छोटे शोध पत्र तैयार करने के हुनर से अपने छात्र /छात्राओं का क्षमता वर्धन करे।
- बच्चे जिज्ञासु बनें तथा समस्याओं के वैज्ञानिक निदान पाने की सोच विकसित करें।
- बच्चे कक्षा 6, 7 एवं 8 से ही अपना यह अभ्यास प्रारंभ कर दें।



पहल एवं प्रयास

- विज्ञानशाला के गठन से साथ ही हमने इस सोच को जमीन पर उतारने की पहल शुरू कर दी।
- हमने समुदाय एवं विद्यालय में जाकर बच्चों एवं शिक्षकों से मिलकर उनके साथ जुड़ाव बनाना आरभ किया।
- जुड़े हुए बच्चों, शिक्षकों को विज्ञान कार्यशाला, विज्ञान प्रदर्शनी, विज्ञान मेला, परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस, मॉडल / प्रयोग प्रदर्शन एवं व्याख्यान प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों में सहभागिता कराते हुए उनमें वैज्ञानिक सोच एवं प्रतिभा को उभारने का कार्य किया।
- विज्ञानशाला की पहल के शुरूआती दौर में हमने देश के अनेक जाने माने विज्ञान विशेषज्ञों को अपने यहाँ आमंत्रित कर अपने से जुड़े बच्चों एवं शिक्षकों के लिए कार्यशालाएं आयोजित कीं।
- 2014 -15 में शुरुआत करते हुए हमने श्री एच सी वर्मा जी को आमंत्रित किया और आसपास के विद्यालयों के शिक्षकों के साथ मिलकर कार्यशाला आयोजित की।
- आगे के सत्रों में कोलकता से श्री समर बागची, पटना कॉमर्स कॉलेज से विज्ञान प्रोफ़ेसर संतोष कुमार एवं श्री प्रहलाद जो पटना श्री कृष्ण विज्ञान केंद्र के विज्ञान विशेषज्ञ हैं को आमंत्रित किया और एक भ्रमणशील प्रदर्शनी लगाई।
- मुंबई विज्ञान केंद्र से विज्ञान विशेषज्ञ गंगासिंह रौतेला तथा अन्वेषिका फाउंडेशन से भी विशेषज्ञों की टीम ने परिवर्तन विज्ञान केंद्र से जुड़े बच्चों एवं शिक्षकों के साथ जुड़कर उनकी विज्ञान की समझ को विस्तार देने में अपना सहयोग किया।
- बच्चों से नियमित स्तर पर जुड़ाव को जारी रखते हुए हमने अब लगभग 10 वर्षों का सफ़र तय कर लिया है।















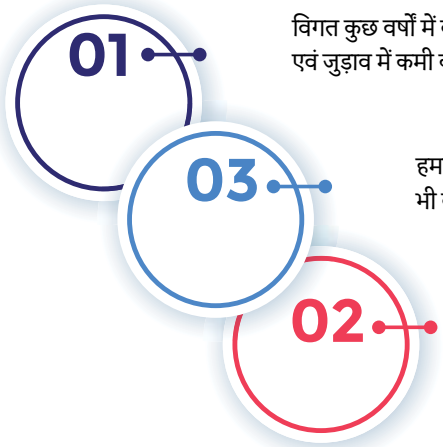


बदलाव :

- साल दर साल जुड़ाव को मजबूत बनाते हुए अब हम कई बड़े कार्यक्रम बच्चों एवं शिक्षकों के लिए आयोजित कर रहे हैं और अन्य विशेषज्ञ भी हमारे बच्चों से मिलकर उनके सीखने की ललक को बढ़ाने के कार्य में सहयोगी बने हैं।
- विगत दो वर्षों में हमने ऐसे कार्यक्रम भी विज्ञानशाला से क्रियान्वित करने का कार्य किया है जिसके माध्यम से हम बच्चों के बीच पहल कर विज्ञान के अन्य मचों द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की मूलभूत जानकारी एवं समझ प्रदान करें।
- परिवर्तन विज्ञानशाला द्वारा अब परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस कार्यक्रम, नेशनल चिल्ड्रेन साइंस कांग्रेस की तर्ज पर आयोजित किया जा रहा जो बच्चों को नेशनल चिल्ड्रेन साइंस कांग्रेस में अपनी प्रतिभागिता का पंजीकरण करने में मदद करता है।
- इस कार्यक्रम की सफलता का प्रमाण है कि अन्य संस्था या संस्थानों द्वारा आयोजित विज्ञान के कार्यक्रमों में बच्चों की उत्साही सहभागिता से मिल रहा है।
- विज्ञानशाला द्वारा आयोजित कुछ प्रमुख गतिविधियाँ जैसे - विज्ञान कार्यशाला, एक दिवसीय विज्ञान कार्यशाला, विज्ञान प्रदर्शनी, विज्ञान मेला, मॉडल/प्रयोग प्रदर्शन प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस आदि कार्यक्रमों ने बच्चों में विज्ञान की समझ को गति एवं विस्तार देने का कार्य किया है।
- हम अब तक इन दस वर्षों में 30 एक दिवसीय कार्यशालाएं, 12 विज्ञान कार्यशालाएं, 4 विज्ञान प्रदर्शनियां, 8 क्विज प्रतियोगिताएं, 22 विज्ञान मेले, 4 मॉडल / प्रयोग प्रदर्शन प्रतियोगिताएं एवं दो परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस गतिविधियाँ आयोजित कर चुके हैं।
- इन सभी कार्यक्रमों के माध्यम से अब तक लगभग 15000 बच्चों एवं शिक्षकों का जुड़ाव बनाने में हमें सफलता मिली है।
- इन सभी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के फलस्वरूप अब परिवर्तन कार्यक्षेत्र के बच्चों की प्रतिभागिता प्रखंड स्तरीय कार्यक्रम एवं जिला सतरीय विज्ञान के कार्यक्रमों में हो रही है ।

विद्यालय प्रायोगिक क्लास की कहानी

चुनौतियां



01 विगत कुछ वर्षों में बच्चों के परिवर्तन केंद्र तक पहुँच एवं जुड़ाव में कमी को लगातार देखा जा रहा है।

03 हमारे संसाधनों का पर्याप्त उपयोग ना हो पाना भी बहुत बड़ी चुनौती है।

02 इन चुनौतियों का समाधान ढूँढने और अपने लक्ष्य के करीब पहुँचने के लिए, विभिन्न विद्यालयों में विज्ञान की प्रायोगिक विधा का इस्तेमाल करते हुए विज्ञान क्लास का आयोजन करना आवश्यक है।

इस वर्ष यानी 2024 - 25 शैक्षणिक सत्र में विज्ञानशाला ने 5 विद्यालयों का चयन अपने नियमित (साप्ताहिक) प्रायोगिक कक्षा आयोजन के लिए किया। इस वर्ष इन चयनित विद्यालयों में प्रायोगिक कक्षा आयोजन का आंकड़ा कुछ इस प्रकार है।

विद्यालयों की संख्या	प्रायोगिक सत्र	प्रदर्शित प्रयोग	जुड़े हुए बच्चे
5	201	105	1234

ये आंकड़े जनवरी माह तक किये गए कार्य के आधार पर बताये गए हैं। विज्ञानशाला ने निरंतरता के साथ लगभग 1250 बच्चों तक जुड़ाव बनाया है। एक विद्यालय में कम से कम 40 से अधिक सत्र आयोजित किए हैं और इन 40 सत्रों के आयोजन में बच्चों को अब तक 105 प्रयोगों से अवगत कराने का कार्य किया। सभी प्रयोग एवं व्याख्यान बच्चों के साथ विद्यालय क्लास के दौरान किए गए।

बदलाव

- कुछ बच्चों ने विज्ञान की बहुत अच्छी समझ विकसित कर ली है और जिला और राज्य स्तर पर प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने लगे हैं। इन बच्चों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में जो भी छात्र या छात्रा नियमित कक्षा में सहभागी बने है उनमें भी अन्य बच्चों की अपेक्षा विज्ञान को समझने एवं जानने की रूचि काफी बढ़ी है।
- इसके साथ हीं लगातार कक्षा के आयोजन से कक्षा के संचालन में रोचकता एवं जिज्ञासा का बढ़ना भी शिक्षकों के लिए उत्साह की बात रही है और उसने क्लास के कल्चर को बदलने का सकारात्मक प्रयास किया है।
- विज्ञानशाला अपनी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में विज्ञान के सैद्धांतिक पहलुओं की समझ बनाने एवं वैज्ञानिक सोच के साथ उन्हें खोजी प्रवृति का बनाने को लगातार प्रयास करता है।
- परिवर्तन विज्ञानशाला द्वारा पिछले दो वर्षों से परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत बच्चों को उनके शिक्षकों एवं जागरूक लोगों की मदद से, स्थानीय समस्याओं से जोड़ते हुए उनके विचार के अनुकूल समाधान ढूंढते की आजादी दी जाती है।
- परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस में हमने बच्चों को इन्हीं परिस्थितियों में ले जाकर कुछ स्थानीय बिन्दुओं के वैज्ञानिक पहलुओं को ढूंढने एवं उनके समाधान जानने के लिए प्रोत्साहित किया है।
- मौजूदा सत्र (2024 -25) में 150 छात्र/ छात्राओं ने अनेक मुद्दों पर वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करते हुए परीक्षण एवं शोधपत्र के आधार पर समस्याओं के निष्कर्ष की लिखित व्याख्या को प्रस्तुत किया और अपनी वैज्ञानिक क्षमता का प्रदर्शन किया।
- इस मंच के माध्यम से बच्चों को अपना रचनात्मक विकास करने का अवसर मिला।
- इसके अतिरिक्त बच्चों में प्रतियोगी कार्यक्रमों की समझ भी बनी है जिसकी वजह से अब बच्चे इंस्पायर अवार्ड एवं विज्ञान मेला में सहभागिता करने लगे है।
- मौजूदा सत्र में 14 बच्चों ने इंस्पायर अवार्ड में अपने शोध एवं नविनिया तकनीक का इस्तेमाल करते हुए मॉडल को सबमिट किया है।
- इन बच्चों की सूचि में माध्यमिक विद्यालय नरेन्द्रपुर से 6, मध्य विद्यालय भरौली से 2, मध्य विद्यालय बडहुलिया से 2, मध्य विद्यालय गोंठी से 1, मध्य विद्यालय बेलही पूरब से 1 एवं मध्य विद्यालय बन्थू श्री राम से 2 बच्चों ने पंजीकरण किया है।
- परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस कार्यक्रम ने बच्चों को नेशनल चिल्ड्रेन साइंस कांग्रेस प्रतियोगिता की भी प्रारम्भिक समझ प्रदान की है जिसमें पिछले वर्ष जाफ़र आलम ने जिला विज्ञान कांग्रेस कार्यक्रम में स्थान प्राप्त करते हुए 31वीं राज्य विज्ञान कांग्रेस कार्यक्रम में भी सहभागिता की।
- जाफ़र ने इसके बाद अपने विद्यालय से एवं परिवर्तन के सहयोग से दरभंगा में आयोजित कार्यक्रम में भी सहभागिता की।
- विज्ञानशाला ने इस वर्ष भी अपने कार्यक्रम- परिवर्तन विज्ञान कांग्रेस में बेहतर प्रदर्शन करने वाले चार बच्चों, - प्रभात कुमार, इमरान अंसारी, प्रिंस कुमार एवं सादाब आलम को जिला विज्ञान कांग्रेस में सहभागिता कराने की योजना बनाई है।

सुधीर सिंह - विज्ञानशाला संचालक

घरौंदा

परिवर्तन शिक्षा इकाई की यह उप-इकाई बच्चों में कला की समझ और दिलचस्पी बढ़ाने के लिये 2014-15 में की गई। यह वैकल्पिक शिक्षा की एक पद्धति भी है।



हमारी सोच

- कला शिक्षा बच्चों के शारीरिक, सामाजिक और मानसिक विकास के लिये महत्वपूर्ण है।
- यह रचनात्मकता और कलात्मक साक्षरता को प्रोत्साहित करती है जो बच्चे के विकास में सहायता करती है।
- कला शिक्षा का मतलब सिर्फ़ सुंदर चित्र बनाना नहीं बल्कि यह एक शक्तिशाली उपकरण है जो विभिन्न तरीकों से बच्चे के विकास को प्रभावित कर सकता है।
- बच्चे अपनी बनाई गई कलाकृतियों के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करते हैं।
- इसके अलावा, कला शिक्षा छात्रों में लचीलापन बढ़ाने में मदद करती है जिससे वे तनावपूर्ण स्थितियों का बेहतर तरीके से सामना कर सकें।

पहल एवं प्रयास

- विद्यालय में कला का माहौल विकसित करना।
- किशोरियों को कला से जोड़ने का प्रयास।
- बच्चों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होना।
- परिवर्तन से जुड़े विद्यालयों में कला शिक्षा जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी। समुदाय के बच्चों की इन आवश्यकताओं को देखते हुए परिवर्तन शिक्षा इकाई की उपइकाई घरौंदा वर्ष 2015-16 में विद्यालय के साथ कला सत्र आयोजित किया। जिससे बच्चे अपनी मन की भावना को चित्र के माध्यम से व्यक्त कर सकें।
- इसके लिए परिवर्तन द्वारा विद्यालय के साथ साप्ताहिक सत्र कराना प्रारंभ किया।
- जिससे बच्चों के मन में कला के प्रति रूचि का विस्तार हो सके।
- घरौंदा इकाई के प्रशिक्षक विद्यालय जाकर वहां के बच्चों के साथ कला गतिविधि कराने लगे।
- एक निर्धारित करिकुलम की व्यवस्था की गयी जिससे इस सत्र को एक आधार मिल सके।
- सत्र कितने दिनों का होगा यह सुनिश्चित करना ज़रूरी था।
- मिलकर एक करिकुलम की सरंचना की गयी और कला शिक्षा शुरू हो गई।

चुनौतियां

- कला के प्रति उदासीनता
- समुचित कला शिक्षा का अज्ञान
- उसकी उपयोगिता पर अनेक प्रश्नचिह्न
- रूढ़ मानसिकता
- विद्यालयों में कला शिक्षकों का अभाव











चुनौतियां

- बच्चों को सीमित करिकुलम की वजह से अपने मन की भावना को प्रकट करने का अवसर नहीं मिल पा रहा था।
- बच्चे वही सीख रहे थे जो जो हम सिखाना चाहते थे।
- बच्चे खुलकर नहीं जुड़ पा रहे थे।
- हमारा करिकुलम भी ग्यारह माह का था।
- इस ग्यारह माह का करिकुलम लेकर हम परिवर्तन कार्यक्षेत्र के 6 विद्यालयों में जाने लगे।
- इस तरह कला सत्र लेकर हम एक वर्ष में सिर्फ 6 विद्यालयो एवं 6 विद्यालयो के बच्चों तक ही पहुँच पाते थे।
- शेष विद्यालयो तक हमारी पहुँच नहीं बन पाती थी।

पहल एवं प्रयास

- वर्ष 2018-19 के सत्र में हमने इस विद्यालय सत्र पर पुनः विचार किया।
- हमने महसूस किया कि हमें ज्यादा से ज्यादा बच्चों तक अपनी पहुँच बनानी चाहिए।
- हमने अपना विद्यालय सत्र 11 माह के बदले 6 माह का सुनिश्चित किया। जिससे हम एक वर्ष में 12 विद्यालयों के साथ काम करने लगे।
- इससे हमारी पहुँच और भी बच्चों तक होने लगी।
- हमने अपने करिकुलम में भी आवश्यक बदलाव किए।
- जो 11 माह के हिसाब से बना था।
- हमलोगों ने एक बार फिर करिकुलम पर विचार किया तो हमने पाया कि हमारे करिकुलम में जितनी भी गतिविधियाँ हैं वे एक कलाकार बनने की तैयारी पर आधारित हैं।
- इस करिकुलम में बच्चों को सोचने का अवसर कम मिल पा रहा है जबकि हमारा उद्देश्य बच्चों को एक कलाकार बनाना नहीं अपितु बच्चों की कल्पना को रचनात्मकता से जोड़ना है।
- गहरे चिंतन के बाद हमने अपने पूरे करिकुलम में बदलाव किया।
- गतिविधियाँ बच्चों की रूचि एवं कला के प्रति उनकी समझ को देखते हुए तैयार की गईं।
- जिसमे बच्चे कला की तकनीक तो सीखेंगे ही इसके साथ ही साथ अपने आस पास की लोक-सस्कृति, अपने दैनिक जीवन, अपनी रूचि को भी कला के माध्यम से प्रस्तुत कर पाएंगे।
- इस तरह एक नये करिकुलम के साथ हम 12 विद्यालयों के समक्ष प्रस्तुत हुए।
- सन 2021 से हम 12 विद्यालयों की जगह 10 विद्यालयों के साथ काम करने लगे और बांकी बचे विद्यालयों में कला आधारित कार्यशाला के माध्यम से जुड़े।

बदलाव

- अब हम एक वर्ष में लगभग कार्यक्षेत्र के सभी विद्यालयों के साथ जुड़े रहते है।
- अब बहुत से विद्यालय कला प्रतियोगिताओं के लिए सजग रहते है।
- विद्यालय में उसकी तैयारी करते है।
- तैयारी के लिए वे परिवर्तन का सहयोग भी लेते हैं।

अभी भी हमने जिस कलात्मक सोच और बदलाव की परिकल्पना की है वह पूरी नहीं हो पायी है। इसके लिए हम निरंतर प्रयास कर रहे है। उम्मीद है कि विद्यालय में एक कलात्मक माहौल हम जल्द ही स्थापित कर पाएंगे।

एनीमेशन की शुरुआत

सोच

एनिमेशन से जुड़े प्रश्न एवं प्रक्रिया की बच्चों को संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध कराना जिससे बच्चों के अन्दर एनिमेशन के प्रति रूचि पैदा हो सके।

पहल

इसके लिए 25 फरवरी 2025 को परिवर्तन परिसर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के विशेषज्ञ अपने देश के प्रसिद्ध चित्रकार एलन शॉ थे। जिनके नेतृत्व में बच्चों ने एनीमेशन को करीब से जानने का प्रयास किया।

आज का जमाना एनीमेशन का जमाना होता जा रहा है। तकनीक के सहारे बड़े से बड़े कामों को सुलभ बनाया जा सकता है। बच्चों को एनीमेशन में एक खास रूचि रहती है। एनीमेशन को हम टीवी पर कार्टून वाले कार्यक्रम से समझ सकते हैं। पर यह एनीमेशन बनाया कैसे जाता है और इसे कौन बनाते है ? सामने वाले कार्टून होता क्या है ? वह चलता या बोलता कैसे है ? इनसे जुड़े अनेक प्रश्न को समझना इस कार्यशाला का उद्देश्य था।

सबसे पहले एनीमेशन क्या है, कैसे बनता है इस पर विशेषज्ञ द्वारा प्रकाश डाला गया। विशेषज्ञ एलन शॉ द्वारा बनाई गई परिवर्तन पुस्तकालय में उपलब्ध कृतियों को प्रतिभागियों द्वारा एक नजर देखा गया। इसके बाद प्रतिभागियों के 4 समूह बनाकर उन्हे किसी कार्य को 12 तरह से एकत्र कर उसका फोटो क्लिक कर लैब में एनीमेशन तैयार करने के लिए भेजा गया। इसमें बच्चों को अपनी चयनित किसी खास वस्तु, चित्र या कुछ और का एक सीरिज तैयार करना था जो एक के बाद एक करके गतिमय होता हो। इसमें बच्चों ने पत्तों, पेस्टल रंग, कागज की नाव जैसे अलग-अलग माध्यम से एनिमेशन की शुरुआत की।

जिसके बाद विशेषज्ञ द्वारा डिजिटल माध्यम से उछलती हुई गेंद का चित्र बनाकर उसके अलग अलग सीरिज निर्माण कर बच्चों को दिखाया इन सभी चित्रों के सीरिज को मिलाकर एक एनिमेटेड विडियो निर्माण किया गया तथा इनका डेमो बच्चों के सामने प्रस्तुत किया गया।

इसके बाद बच्चों ने एक कहानी की लड़की के एनिमेशन के लिए संग्रह तैयार किये गए। जिसमे एक लड़की साईकिल चला रही है। साईकिल पर एक चिड़िया बैठी है। इसके 24 चित्र पर सभी बच्चों द्वारा रंग भरे गए। बच्चों द्वारा एनीमेशन के लिए चित्र की एक श्रृंखला पूरी की गयी। इन सभी कृतियों को एनीमेशन मे कैसे बदला जाता है, इसे समझाते हुए सभी का एनीमेशन तैयार कर प्रतिभागियों के सामने प्रस्तुत किया गया। बच्चे उत्सुकता से जुड़े और अपनी कृति को टीवी पर चलता हुआ देख बहुत उत्साहित हुए।

इस कार्यशाला में प्रतिभागी 33 थे। जिसमें 24 बच्चे, 4 महिलायें, 2 किशोर, 2 किशोरी और एक युवा किसान शामिल रहे।

राजवर्धन - घरौंदा संचालक

बालघर किसलय

शिक्षा की यह उप इकाई बच्चों की रचनात्मकता को उड़ान देने का प्रयास करती है। इसके अंतर्गत बच्चों को कविता कहानी लिखने को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके लिए विशेषज्ञ बुलवाये जाते हैं जो बच्चों की मेंटरिंग करते हैं जिससे बच्चों की रचनाएँ और निखार पा सकें। इस तरह की कार्यशालाओं से निकली रचनाओं को पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी किया जाता है।

किस्से लबालब किताब उसी प्रकार की कार्यशाला का प्रमाण है । इस सुंदर किताब की कहानियाँ और चित्र बच्चों द्वारा लिखे और रचे गए हैं । विशेषज्ञ वंदना राग सुपरिचित कहानीकार और इलस्ट्रेटर यशस्वी प्रोयोती राय रही हैं ।



चहकने की ललक पत्रिका के 10 साल के सफरनामे की प्रदर्शनी

दिनांक 26 मई 2024 को चहकने की ललक पत्रिका के 10 साल पूरे होने पर अब तक पत्रिका में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी बाल लेखक और चित्रकार को परिवर्तन आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम का लक्ष्य बच्चों को अपने सफ़र को महसूस कर देखना, समझाना था। चहकने की ललक पत्रिका बच्चों की पत्रिका है जो बच्चों के द्वारा ही तैयार की जाती है। इस कार्यक्रम में अंक 1 से लेकर अंक 25 तक की सभी पत्रिकाओं की एक प्रदशनी भी लगायी गयी थी। जिससे पत्रिका में हुए बदलाव का अवलोकन सीधे तौर पर किया जा सकता है।

चहकने की ललक क्या है? इसके जरुरत कहाँ से हुई? इनके बाल लेखकों एवं चित्रकारों तथा समय दर समय इसमें हुए बदलाव पर प्रकाश डालते हुए बातचीत की गई। इसके साथ ही साथ आलोक जी द्वारा 2014 से लेकर अभी वर्त्तमान 2024 तक का चहकने की ललक का सफरनामा प्रस्तुत किया गया। जिसमे पहले से अब तक में हुए बदलाव, नयापन एवं चुनौती पर प्रकाश डाला गया। इसके साथ ही शिक्षा इकाई की एक अन्य उप-इकाई बालघर किसलय के बच्चों द्वारा लिखित चित्रित पुस्तक "किस्से लबालब" पर भी प्रकाश डाला गया।

इसके बाद चहकने की ललक अंक 25 में प्रकाशित कहानी, कविता एवं चित्रकला के रचनाकारों के हाथों चहकने की ललक अंक 25 का विमोचन किया गया।

नारायणपुर की अंकिता द्वारा पत्रिका में छपे "बाल संवाद" को प्रस्तुत किया गया। बाल संवाद के बाद रागिनी कुमारी द्वारा अपनी बात जिसमे वो अपनी रचना और आगे चलकर वह क्या बनाना चाहती है, यह बात साझा की गई। वहीं वर्षा कुमारी ने माहौल को गुदगुदाते हुए चहकने की ललक अंक 24 में प्रकाशित अपना चुटकुला सुनाकर सबको हँसाया। नरेन्द्रपुर का समर ने जो परिवर्तन से नया नया जुड़ा है ने भी मंच पर आकर अपनी बात रखी। फिर इसी तरह प्रिया कुमारी, रिमझिम कुमारी, मोहित कुमार, रितिका कुमारी, अनुजा कुमारी एवं शिवानी कुमारी एक के बाद एक अपनी बात, अपनी रचना एवं अपने सपनों को लेकर सबके सामने रखा।

गोठी गाँव का आयुष कुमार जिसने बालघर आँगन से परिवर्तन आना शुरू किया था उसके बाद, घरौंदा, झरोखा, विज्ञानशाला, पुस्तकालय के साथ साथ बाल पथिक के कार्यक्रम से जुड़ा था मंच पर आकर अपने सफरनामे की बात रखी वह बालघर आँगन से शुरु कर आज परिवर्तन के लगभग सभी कार्यक्रम में शामिल होते हुए 12वीं का छात्र हो चुका है।

कार्यक्रम का अंत सभी बच्चों द्वारा चहकने की ललक अंक 1 से लेकर 25 तक की पत्रिका की प्रदर्शनी देखते हुए किया गया।

- बाल घर किसलय संचालक



गणितशाला

समुदाय के बच्चों में गणित की समझ को बढ़ाना और गणित विषय के प्रति व्याप्त अनावश्यक भय को समाप्त करना इस इकाई की स्थापना के पीछे का उद्देश्य था।

समय समय पर बिशेषज्ञों को बुलाकर कार्यशालाएं करवायी गयीं। गणित विषय की जटिलताओं को कम करने एवं गणित विषय की तरफ बच्चों की रूचि बढ़ाने का प्रयास गणितशाला के माध्यम से किया जा रहा है। विभिन्न किट एवं पठन पाठन सामग्री की मदद लेकर बच्चे काफी सहजता से गणित की बड़ी से बड़ी गणना को आसानी से कर लेते हैं। इसके माध्यम से बच्चों के प्रायोगिक पक्ष को महत्त्व दिया जाता है।

एक दिवसीय गणित पुस्तकालय कार्यशाला

यह हाल ही में हुए नवाचार की गतिविधियाँ हैं जिन्हें बच्चों ने खूब पसंद किया।



गणित माला से गिनती का अभ्यास - क्लिप 1 : इस गतिविधि में बच्चों को एक कृत्रिम तितली लेकर गिनती माला के किसी एक मोती पर उस तितली को बैठा देना था।बाकी बच्चों ने गिनकर बताया कि तितली कौन सी संख्या पर बैठी है। फिर दूसरा बच्चा उस तितली को आगे दूसरी संख्या पर बैठाता और बाकी बच्चे फिर गिनकर बतलाते कि तितली कहाँ बैठी है।

क्लिप 2 : इस गतिविधि को हाथी और मोर गतिविधि भी कह सकते हैं। इस गतिविधि में 2 ग्रुप बनाया गया। एक ग्रुप का नाम हाथी और दुसरे ग्रुप का नाम मोर रखा गया। जब एक ग्रुप गणितमाला से गिनती गिनता था, तो दूसरा ग्रुप उस गिनती को ध्यान से देखता था कि कोई गलती हो तो बता सकें।

क्लिप 3 : इस गतिविधि में बच्चों को एक अंकों की संख्या एवं 2 अंकों की संख्या की जानकारी मोतियों की माला के माध्यम से दी गयी।

क्लिप 4 : 200 सौ मोतियों की माला से उलटी गिनती का अभ्यास कराया गया है।

घर चलो गतिविधि : इस गतिविधि से यह सीख मिलती है कि हमें काम लगातार मेहनत के साथ करना चाहिए। इस गतिविधियों हरी नाम का खरगोश और तारा नाम की एक कछुवी रहती है।तारा का हरी से मौसी का सम्बन्ध है। हरी को अपने आप पर बहुत घमंड रहता हैं कि हम बहुत तेज चलते हैं। हरी और तारा में एक दिन दौड़ प्रतियोगिता होती हैं जिसमें हरी को हार का सामना करना पड़ता हैं। इस कहानी को बताने के बाद इस गतिविधि में दो छात्रों को शामिल किया गया। दोनों छात्रों को एक कृत्रिम तितली और एक पासा देकर 1 से लेकर 20 चलाया गया और पासो के साथ जो अंक आया, उसको जोड़ते हुए वे आगे बढ़े। जो पहले 100 तक पहुँचा वह इस खेल का प्रथम विजेता हुआ।



मान कार्ड : मान कार्ड की मदद से सबसे छोटी तथा सबसे बड़ी संख्या का अभ्यास कराया गया।इकाई दहाई सैकड़ा का ज्ञान कराया गया।स्थानीय मान, जातीय मान को बताया गया।

सौ रंगों की खोज गतिविधि : सौ रंगों का फूल यह कहानी एक बच्ची और हाथी के बीच की हैं, जिसमें बच्ची को फूल से बहुत लगाव था। वह जहाँ कहीं भी जाती थी तो फूल को देखती और सूंघती थी, यहाँ तक कि वह फूल को अपने बाल में भी टांग लेती थी और स्कूल में भी फूल को लेकर जाती थी।

एक गतिविधि सौ रंगों के फूल पर आधारित रही इसमें चार छात्र शामिल हुए और पासों के साथ जो अंक आयेगा उसको जोड़ते हुए आगे बढ़ंगे।जो पहले 100 पर पहुँचेगा वह इस खेल का प्रथम विजेता होगा।

कैलेंडर जोड़ गतिविधि : यह गतिविधि जोड़ पर आधारित हैं। इसमें यह बताया गया है कि किसी भी कैलेंडर का कोई महीना ले लेंगे और उसमें चार अंक दो ऊपर और ठीक दो नीचे का और उसको ब्रजगुणनखंड विधि से जोड़ेगे तो योगफल समान आयेगा।

गणितशाला संचालक

पुस्तकालय

शिक्षा इकाई की संरचना में एक समृद्ध पुस्तकालय का बहुत महत्व है। अतः उसी के अंतर्गत परिवर्तन पुस्तकालय की स्थापना 2012 में हुई। स्थानीय समाज एवं भूगोल की आवश्यकताओं पर निरंतर शोध करने के उपरांत यह तय पाया गया कि समुदाय के बच्चों एवं बड़ों दोनों के लिए पुस्तकालय आवश्यक हैं, क्योंकि वह ज्ञान और मनोरंजन का स्थल होने के अलावा स्कूली करीकुलम में रिक्त पाठों के पूरक का काम करता है।

पुस्तकालय की तैयारी में सबसे पहले एक नियत स्थान, आकर्षक सज्जा, विषयवार रोचक पुस्तकों का चयन एवं प्रदर्शन होना चाहिए जिससे बच्चे एवं बड़े दोनों पुस्तकालय की ओर खिंचे चले आयें। कहानी कविता के माध्यम से पढ़ने लिखने और सीखने सिखाने का सिलसिला प्रारंभ हो। ज्ञान को मनोरंजक ढंग से आत्मसात कर पाठक जिज्ञासु बनें और अपने समय और समाज की बेहतर समझ विकसित करें। समुदाय में घूमकर देखा गया और यह पता चला की कई पंचायतों के विद्यालयों में पुस्तकालय बनाए गए किन्तु वे यूँही पड़े रह गए और ढह गए। यह देखते हुए परिवर्तन में एक छोटे से पुस्तकालय की शुरुआत हुई। जिसमें विभिन्न तरह की बाल-साहित्य की पुस्तकें और बड़ो के लिए भी पुस्तकें रखी गईं। वर्ष 2012-15 तक पुस्तकालय सही तरीके से चला। बच्चे आते थे, पढ़ते थे और किताबें घर भी ले जाते थे।

वर्ष 2015-23 तक लाइब्रेरी में बच्चे और अभिभावक भी आने लगे और पढ़ने लगे। परिवर्तन के सदस्य और पुस्तकालय संचालक स्कूलों और समुदायों में जाते थे और वहां गतिविधियाँ भी करते थे जैसे - रीड अलाउड और बुक टॉक गतिविधियां। लेकिन इसके बावजूद धीरे धीरे पुस्तकालय में उपस्थिति घटने लगी। लोग समुदाय में परिवर्तन के चल- गतिशील पुस्तकालय कार्यक्रम, गुल्लक पिटारा से अधिक संख्या में जुड़ने लगे। गुल्लक पिटारा - बाज़ार और कार्यक्रमों में पुस्तकों के स्टाल लगाते थे जो घूमने वालों को बहुत आकर्षित करते थे। इससे परिवर्तन स्थित स्थायी पुस्तकालय में उपस्थिति प्रभावित हुई।

फलतः पुस्तकालय को ही नए सिरे से पुनरकल्पित करने की योजना बनी।

चुनौतियां

- सेट-अप कैसे करें?
- किताबों को कैटलॉग कैसे करें?
- कौन सी गतिविधियां करें?



बदलाव

हमने गोवा की एक गैर-सरकारी संस्था-बुकवर्म से सहयोग लिया जो देश भर में पुस्तकालय कार्यक्रम को सफलता पूर्वक संचालित करती है।। पुस्तकालय को खुले, हवादार पुस्तकालय में बदला। शेल्फ भी हमने ऐसे बनवाए जिसमें किताबें रखने पर आसानी से कवर पेज दिखे। किताबों को अलग अलग आयु वर्ग के हिसाब से चार कलर कोड एवं अलग-अलग विधा में किताबों को बांटा गया और एकआकर्षक पुस्तकालय बन गया। किताबें एक दम खुली शेल्फो में रखी गई हैं जहाँ बच्चेंआसानी से किताबों तक पहुँच सकते है एवं अपनी मर्जी कि किताबें उठकर पढ़ सकते हैं। किताबों का अच्छा संग्रह तो हमारे पास था ही उसके साथ-साथ हमने बच्चों के लिए गेम, पज़ल, पत्रिका, मानचित्र को भी अपने संग्रह में शामिल किया ।

कैसे ज्यादा से ज्यादा बच्चे किताबों से जुड़ें और उनमें कौशल क्षमता तथा रचनात्मकता का विकास हो?

बुकवर्म संस्था से ज़ूम कॉल के माध्यम से जुड़ कर हमने समझने की कोशिश की, कि वे कैसे अपना अत्यंत सफल पुस्तकालय कार्यक्रम चलाते हैं? मैंने उनसे जुड़कर, -लाइब्रेरी मेंटरिंग , सपोर्ट मीटिंग एवं पुस्तकालय उदेश्य और अभ्यास की पांच दिवसीय कार्यशाला की। मुझे सत्र लेने में जो, भी चुनौतियों आती थीं उन्हें उनसे साझा कर मैंने समाधान जानने की कोशिश की।

परिवर्तन पुस्तकालय संरचना में बदलाव

वर्ष 2023 में विचार आया कि पुस्तकालय का सेट-अप बदलना चाहिए। ऐसा सेट अप तैयार किया जाए , जहां गतिविधियाँ हों, जहाँ सभी अपनी मर्जी की किताबें पढ़ने आयें और अपनी बातें रखने के लिए स्वतन्त्र हों।

बच्चों का पुस्तकालय से जुड़ाव :

वर्ष 2023 से हम बच्चों के साथ जुड़कर काम करने लगे ।





प्रयास

- हमने खेल-खेल में बच्चों को किताबों से जोड़ना शुरू किया जिसके लिए हमने बहुत सारी गतिविधियाँ कीं और लगातार कर रहे हैं।
- हमने पॉप-अप लाइब्रेरी की शुरुआत की।
- हम स्कूल एवं समुदाय में जाकर थोड़ी देर के लिए एक छोटा -सा पुस्तकालय सेट-अप करते हैं और बच्चों के साथ खेल-खेल में किताबों को भी उठाते हैं।
- इससे बच्चे हमें जानने लगे और धीरे-धीरे परिवर्तन पुस्तकालय आने लगे।
- उसके बाद से अभी हम बच्चों के साथ बहुत सारी गतिविधियाँ कर रहे हैं, - जैसे रीड अलाउड, बुक टॉक सामान्य डायरी लेखन, पुस्तकालय में अलग-अलग थीम पर आधारित डिस्प्ले कर रहे हैं।

बदलाव

- आज बच्चे अच्छी संख्या में पुस्तकालय से जुड़ गए हैं।
- वे पुस्तकालय आते हैं और सत्र में भाग लेते हैं।
- आज परिवर्तन पुस्तकालय में 170 पुस्तकालय सदस्य हैं। वे पुस्तकों को घर भी लेकर जाते हैं ।
- हम नजदीक के स्कूल के बच्चों को पुस्तकालय लाते भी हैं एवं उनके साथ सत्र का आयोजन करते हैं।
- हम हर महीने लाइब्रेरी गतिविधि कैलेंडर भी बनाते हैं जिससे सबको स्पष्ट हो कि कौन दिनांक को कौन-सी गतिविधि होने वाली है।
- अभी हम पुस्तकालय को समुदाय में ले जाने के लिए सक्षम हो पा रहे हैं और पुस्तक को समझने की जो प्रक्रिया होती है उसमें जागरूकता दिखलाई पड़ती है।

परिवर्तन संस्था, बुकवर्म टीम, सुजाता, जेनिफर, प्रीति, आनंदिता का धन्यवाद जिनकी वजह से हमारा परिवर्तन पुस्तकालय कार्यक्रम आज पुनः कल्पित हो सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है।













स्कूल या समुदाय में पॉप-अप लाइब्रेरी का आयोजन।

- हम महीने में 4 पॉप-अप करते थे जो कि हर शनिवार को होता था। अब महीने में 2 पॉप-अप होते हैं जिसमें हम परिवर्तन लाइब्रेरी से अलग-अलग विधा की 30 किताबों को लेकर जाते हैं, स्कूल/समुदाय में 2 घंटे के लिए मिनी लाइब्रेरी का सेट-अप करते हैं और वहाँ बच्चों के साथ अलग-अलग किताबों से जुड़ी गतिविधि करते हैं।
- इसी दौरान हम इच्छुक लोगों को किताबें छूने, देखने के लिए देते हैं तथा अंत में बताते हैं कि और भी ऐसी किताबें पढ़नी या ऐसे खेल खेलने है तो आप परिवर्तन लाइब्रेरी आ सकते हैं।
- यदि आप हमेशा परिवर्तन पुस्तकालय आने लगेंगे तो आपना लाइब्रेरी कार्ड बनाकर किताबें घर भी ले जाकर पढ़ सकते हैं।

बच्चों को पॉप-अप लाइब्रेरी में ज्यादातर म्यूजिकल बुक, रिंग गेम और डम्ब शार्ड गेम बहुत अच्छा लगता है। हमने इस साल अभी तक 30 पॉप-अप लाइब्रेरी किए हैं। जिसमें हमने स्कूल में 20 एवं समुदाय में 10 पॉप-अप लाइब्रेरी सेशन किए जिसमें लगभग 1217 बच्चे सहभागी बने।

पॉप-अप लाइब्रेरी की वजह से ही आज बच्चों में पढ़ने की इच्छा जागी है और आज वे पुस्तकालय से लगातार जुड़े हुए हैं। पॉप-अप को हम आगे भी जारी रखना चाहते हैं।

नाम	पॉप-अप लाइब्रेरी की संख्या	बच्चों की सहभागिता
विद्यालय	20	847
समुदाय	10	370
कुल	30	1217

किताबवा कार्यक्रम

सोच

किताबवा कार्यक्रम का उदेश्य यह है कि विधालय और समुदाय के साथ मिलकर अलग-अलग पुस्तकालय गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में बाल-साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न करना है। साथ ही साथ बच्चों में बाल-साहित्य के माध्यम से रचनात्मकता एवं विभिन्न तरह के कौशल का विकास करना है।

इस वर्ष किताबवा कार्यक्रम के अंतर्गत हमने प्राथमिक विद्यालय से लेकर मध्य विद्यालय तक के बच्चों के साथ पहुँच बनाने की कोशिश की गयी। साथ ही साथ हमने एक मध्य विद्यालय में पुस्तकालय का सेट-अप किया और किताबें कितनी प्रकार की होती हैं पर बातचीत, रीड अलाउड और किताबें पसंद करने जैसी गतिविधियाँ कीं। इसे बच्चों के स्कूल पुस्तकालय से जोड़ने का प्रयास किया गया ताकि बच्चों को स्कूल में ही अच्छे बाल-साहित्य के संग्रहों से जोड़ा जा सके।

01 सत्र 2024-25 में पुस्तकालय द्वारा 4 किताबवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

02 14 समुदाय और विद्यालयों से 414 बच्चों ने भाग लिया।

03 11 अलग-अलग रोचक गतिविधियां करवाई गयीं।

पूजा कुमारी - पुस्तकालय संचालक

उमंग

सामुदायिक खेल

9 वर्षों की यात्रा



सामुदायिक खेल उमंग की स्थापना 3 कार्यक्रमों को लेकर 1 नवम्बर 2016 को हुई।



सामुदायिक खेल उमंग से पहले यह कार्यक्रम 8 जुलाई 2015 को मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन के तहत शुरू हुआ जो 30 अक्टूबर 2016 तक चला।

इसका ढांचा त्रिस्तरीय था

खेल विकास के लिए
खेल उत्कृष्टता के लिए
कार्य में नेतृत्व कौशल



खेल विकास के लिए

हमारी सोच

(Sports for Development) खेल विकास के लिए समुदाय एवं स्कूल सत्र:

पहल:

- इस कार्यक्रम का उद्देश्य "खेल के माध्यम से बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास करना" है।
- उद्देश्य को पूरा करने हेतु परिवर्तन के चयनित 8 पंचायतों के 36 गांवों में वर्ष 2015 में S4D कार्यक्रम हेतु सबसे पहले गांवों में सर्वे का काम किया गया। सर्वे से जानकारी प्राप्त होने के पश्चात समुदाय के साथ बैठक कर परिवर्तन के अन्य कार्यक्रमों का उद्देश्य साझा कर लोगों का सुझाव लिया गया और उनकी सहमति से उस टोले से एक युवा (लड़के/लड़कियों) का चयन किया गया जिसे CYL(समुदाय युवा नेता) का नाम दिया गया।
- इनकी संख्या 80 थी।
- चयनित युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाता था जो बच्चों के साथ सप्ताहिक खेल सत्र करते थे।
- हर सत्र में 25 से 30 बच्चे (06 साल से 12 साल के) होते थे।
- यह सत्र 36 गांवों में 2172 बच्चों के साथ शुरू हुआ जिसमें लड़कों की संख्या-1334 और लड़कियों की संख्या- 837 थी।
- सत्र की निगरानी हेतु युवा परामर्शदाता होते थे।

बच्चों के साथ डोमेन आधारित सप्ताहिक खेल सत्र होता है जिसमे अलग-अलग डोमेन आधारित सोंग, गेम और संदेश बच्चों को सिखाया जाता है। हर दो माह में बच्चों के अभिभावक के साथ समूह में बैठक की जाती है। बैठक में बच्चों का फीडबैक लिया जाता है और अभिभावक के साथ भी खेल सत्र कराया जाता है और उस पर प्रतिक्रिया ली जाती है। अभिभावक को बताया जाता है कि इसी तरह से आपके बच्चों को खेल-खेल में बहुत सी चीजों को सिखाया जाता है और जीवन उपयोगी संदेश दिया जाता है।

इस प्रयास के लिए मैजिक बस इंडिया फाउन्डेशन संस्था के कार्यक्रमों से सीख बनी। वर्ष 2015 से अक्टूबर 2016 तक मैजिक बस इंडिया के तहत यह कार्यक्रम 18 महीने परिवर्तन के चयनित आठ पंचायतों में चला। उसी को आधार मानकर 1 नवम्बर 2016 से इस कार्यक्रम को सामुदायिक खेल 'उमंग' के नाम से चलाया जा रहा है।

चुनौतियां

01 गाँव की रूढ़ियों की वजह से लोग खेलों से परहेज़ करते थे।

02 खेलों की उपयोगिता का कोई ज्ञान क्षेत्र में दिखलाई नहीं पड़ता था।



बदलाव

01 बच्चों में स्कूल छोड़ने की प्रवृति में सुधार हुआ है

02 सत्र के बच्चे खाना खाने से पहले साबुन से हांथ धोकर खाना खाते हैं

03 सफाई पर ज्यादा ध्यान देते हैं

04 बच्चों में डर देखने को नहीं मिलता है

05 बच्चों में प्रतियोगिता में भाग लेने का रुझान बढ़ा है



Sports for Excellence (खेल उत्कृष्टता के लिए): इस मॉडल का उद्देश्य गांवों और स्कूलों में खेल का माहौल बनाना है।

पहल एवं प्रयास

- S4E के तहत सबसे पहले मैजिक बस इंडिया फाउन्डेशन के तहत वर्ष 2015 में फुटबॉल खेल को लेकर पहल की गई।
- परिवर्तन कार्य-क्षेत्र के गांवों से लड़का एवं लड़की खिलाड़ियों को खोजा गया।
- खिलाड़ियों की उम्र 12 से 16 वर्ष निर्धारित की गयी जिसके तहत 70 किशोर/किशोरियों का पंजीकरण हुआ।
- पंजीकृत खिलाड़ियों को नियमित प्रशिक्षण फुटबॉल कोच के द्वारा दिया जाने लगा।
- वर्ष 2016 में जब मैजिक बस से हट कर सामुदायिक खेल उमंग के नाम से कार्यक्रम शुरू हुआ तो फुटबॉल टीम का पंजीकरण सिवान जिला फुटबॉल संघ के यहाँ कराया गया।
- उस समय सामुदायिक खेल उमंग के तहत 3 नामों से टीम का पंजीकरण हुआ: 1) परिवर्तन बॉयज फुटबॉल क्लब 2) परिवर्तन बॉयज फुटबॉल एकेडमी, 3) परिवर्तन वीमेंस फुटबॉल क्लब।
- उस समय फुटबॉल कोच रिंकू कुमारी थीं जिन्होंने वर्ष 2016 से 2020 तक टीम को प्रशिक्षण देने का काम किया।

बदलाव

फुटबॉल

आज फुटबॉल टीम कोच प्रियंका कुमारी के नेतृत्व में 70 खिलाड़ियों के साथ चल रहा है।

सोच

वर्ष 2018 में संस्था के संस्थापक संजीव जी द्वारा कबड्डी खेल शुरू करने हेतु पहला सुझाव मिला। इस सुझाव पर उमंग टीम ने क्षेत्र में काम करना शुरू किया।

कबड्डी

पहल एवं प्रयास

- परिवर्तन के चयनित 08 पंचायतों में कबड्डी खिलाड़ी हेतु प्रचार किया गया और सभी पंचायतों में निर्धारित तिथि को ट्रायल प्रक्रिया के माध्यम से 20-20 खिलाड़ियों का चयन किया गया।
- चयन पश्चात सभी खिलाड़ियों को उनके पंचायत में ही एक सप्ताह प्रशिक्षण दिया गया।
- सभी प्रशिक्षक बिहार कबड्डी संघ पटना से प्रशिक्षण देने आये थे।
- प्रशिक्षण के अंतिम दिन 12-12खिलाड़ियों का चयन मैच खेलने के लिए किया गया।
- सभी टीमों के साथ लीग मैच हुआ।
- सभी टीमों को एक रोचक नाम भी दिया गया जैसे: नरेन्द्रपुर दबंग, बलिया बाजीगर, भरौली सुरमा।
- मैच अलग -अलग पंचायतों में आयोजित किया गया जिसका फाइनल मैच परिवर्तन परिसर फुटबॉल ग्राउंड में जामापुर जोशीले और नरेन्द्रपुर दबंग के बीच खेला गया था जिसमे जामापुर टीम विजेता और नरेन्द्रपुर टीम उपविजेता बना।

वर्ष 2019 में लड़कियों की दो टीम बनाई गयी : परिवर्तन झाँसी और उमंग ज्योति

बदलाव

इसी तरह से लड़की टीम की शुरुआत हुई। धीरे-धीरे हर वर्ष लड़की टीम की संख्या में बढ़ोतरी होती गयी और नियमित अभ्यास के लिए वे उड़ान खेल मैदान में उपस्थिति होती गईं। आज देखा जाये तो आठो पंचायत में एक-एक लड़की टीम है इसके अलावा, 03 स्कूल बड़हुलिया, भवराजपुर, बंथू श्रीराम में भी लड़कियों की टीम है।

साइक्लिंग

वर्ष 2019 में साइकिल रेस कराने की सोच बनी जिसके लिए बिहार साइक्लिंग संघ के तकनीकी सलाहकार से बातचीत हुई।

पहल एवं प्रयास

- दिनांक 19 और 20 जनवरी 2019 को साइकिल रेस का आयोजन हुआ।
- जिसमें 233 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- आज परिवर्तन बिना बाहरी सहयोग के इस कार्यक्रम को कर रहा है।
- इस वर्ष 6 और 7 दिसम्बर को साइकिल रेस कराया गया जिसमें 255 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

बदलाव

- आज हम अपने आप को एक बेहतर कोच के रूप में देखते हैं।
- जिला स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में उमंग के ज्यादातर खिलाड़ी भाग ले रहे हैं।
- राष्ट्रीय स्तर पर खिलाड़ियों को मेडल भी हासिल हुआ है।
- सामुदायिक खेल उमंग में लड़कियों की संख्या काफी अच्छी हो गयी है। और अब वे दर्शकों के सामने अपने किट पहनकर प्रदर्शन कर रही हैं।
- हर वर्ष खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर के खेलों भाग ले रहे हैं।





(Leadership in Action) कार्य में नेतृत्व कौशल

LIA (नेतृत्व विषयक): परिवर्तन परिसर में मैजिक बस इंडिया फाउन्डेशन के तहत मैजिक बस कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2015 के अगस्त माह में हुई। उस समय गाँव के युवाओं को लीडर बनाने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम शुरू किया गया था। वह लीडर सामुदायिक युवा नेतृत्वकर्ता (CYL) के रूप में बच्चों के साथ काम करता था।

पहल एवं प्रयास

- वर्ष 2016 से इस कार्यक्रम को 2 स्कूलों में कक्षा 9 और 10 के विद्यार्थियों के साथ शुरू किया गया।
- इसके अलावा गांवों में किशोरियों को भी लीडरशिप प्रशिक्षण देने का काम शुरू हुआ साथ में गांवों में युवा स्टडी सेंटर बनाया गया।
- कक्षा 9 और 10 के विद्यार्थियों के साथ मासिक प्रशिक्षण शुरू हुआ।
- यह प्रशिक्षण अभी 9 स्कूलों में चल रहा है।
- किशोरी लीडरशिप प्रशिक्षण हेतु महिला समाख्या और उमंग ने मिलकर साझा पहल की और गांवों में समुदाय एवं किशोरी के माता पिता से बातचीत कर महीने में दो दिन प्रशिक्षण शुरू हुआ।
- स्टडी सेंटर के लिए उमंग के लीडरशिप प्रशिक्षक द्वारा युवाओं के साथ बातचीत कर काम शुरू किया।
- दो तरह की गतिविधियाँ आयोजित की गईं: क) स्कूल संवाद विषयक प्रतियोगिता ख) परिवर्तन में संवाद विषयक प्रतियोगिता।

चुनौतियां

- स्कूल प्रबंधक का अपेक्षित सहयोग न मिलना
- प्रतिभागियों में प्रतियोगिता के प्रति उदासीनता
- प्रतियोगिता में बोलने में झिझक

बदलाव

- आज लीडरशिप कार्यक्रम को स्कूल एवं समुदाय स्तर पर एक पहचान मिली है तथा इन दोनों स्तर पर हम अपने आप को एक उत्प्रेरक की भूमिका में पाते हैं।
- विद्यार्थियों एवं किशोरियों में नेतृत्व कौशल की समझ बढ़ी है।
- हमारा प्रशिक्षण कौशल भी पहले की अपेक्षा बेहतर हुआ है।

आगे का लक्ष्य: नेतृत्व विषयक का लक्ष्य यह है कि स्कूल एवं समुदाय स्तर पर विद्यार्थियों एवं किशोर/किशोरियों में नेतृत्व कौशल तथा व्यक्तिगत विकास के प्रति संवेदनशील बनाने हेतु प्रेरित कर सकें।

सत्र 2024-25 का दो महत्वपूर्ण कार्यक्रम: 1) पंचायत स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट 2) पंचायत स्तरीय बालिका कबड्डी महामुकाबला।

पंचायत स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट: दिनांक 21 से 24 नवम्बर 2024 को सामुदायिक खेल उमंग द्वारा पहली बार पंचायत स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट कराया गया, इस टूर्नामेंट में 8 टीमों के 128 खिलाड़ियों ने भाग लिया। जिसमें मियाँ भटकन V/S बलिया पंचायत टीम के साथ फाइनल मैच खेला गया। फाइनल मैच का विजेता मियाँ भटकन स्टार्स टीम और उपविजेता बलिया पैंथर्स टीम हुआ।



पंचायत स्तरीय कबड्डी महामुकाबला: दिनांक 24-26 नवम्बर 2021 को पहली बार पंचायत स्तरीय कबड्डी महा मुकाबला का आयोजन किया गया, इस आयोजन में 6 टीमों के 72 खिलाड़ियों ने भाग लिया। वर्ष





2022 में आठ पंचायत की टीमों के 96 खिलाड़ियों ने भाग लिया। 2022 के बाद हर साल आठ टीमें इस प्रतियोगिता में भाग ले रही है। वर्ष 2024-25 के सत्र में पंचायत स्तरीय बालिका कबड्डी महामुकाबला का आयोजन 4 से 6 अक्टूबर 2024 को किया गया था। इस आयोजन में भी आठ टीमों के 96 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम को रोचक बनाने हेतु आठों टीमों को एक रोचक नाम से जर्सी भी दी गई :- भरौली आँधी, मियाँ भटकन मर्दानी, बलिया पर्वत, गड़ार गंगा, जामापुर तूफान, भवराजपुर चिंगारी, नरेन्द्रपुर ज्वाला और चंदौली-गंगौली बिजली।



बदलाव

इस मैच से समुदाय के लोगों ने प्रेरित होकर गाँव में दशहरा, दीपावली जैसे पर्व पर लड़कियों के कबड्डी मैच का आयोजन करना शुरू कर दिया है। यह एक समुदाय के लिए बड़ी बात है जहाँ लोग आर्केस्ट्रा, नाच का आयोजन करते थे उसे बंद कर कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन कर रहे हैं।

बालिका कबड्डी टीम अब धीरे-धीरे 3 स्कूलों में गठित है जो अलग-अलग प्रतियोगिताओं में भाग ले रही है। इस वर्ष की बात करें तो राज्यस्तरीय मैचों में 24 बालिकाओं ने मैच खेला वहीं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में 6 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

इस प्रयास के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गई:-

1. समुदाय एवं स्कूल खेल सत्र,
2. समुदाय खेल प्रतियोगिता,
3. स्कूल खेल प्रतियोगिता,

इन गतिविधियों को आयोजित करने में निम्नलिखित चुनौतियाँ आई:

1. गाँव में, स्कूलों में ग्राउंड की कमी,
2. स्कूल, कोचिंग और सत्र समय एक होना,
3. CYL का जुड़ाव न होना।

धीरे-धीरे उमंग एथलेटिक्स एवं खेलों के प्रशिक्षण भी शुरू कर रहा है। समुदाय में इसको लेकर बहुत उत्साह है।

एथलेटिक्स: उमंग इकाई द्वारा वर्ष 2021 में दौड़ प्रतियोगिता शुरू की गई। बाद में उसका नाम बदलकर एथलेटिक्स प्रतियोगिता रखा गया। इस प्रतियोगिताको कराने का उद्देश्य एथलेटिक्स के माध्यम से शारीरिक तंदुरुस्ती को बनाये रखने की प्रेरणा देना था।

इस प्रतियोगिता के अंतर्गत करायी गयी प्रतियोगितायें: 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़, 800 मीटर दौड़, 1500 मीटर दौड़, लम्बी कूद, ऊँची कूद, 100X4 मीटर रिले दौड़ और गोला फ़ेंक।

गली ओलंपिक: उमंग द्वारा वर्ष 2017 में पहली बार गली ओलंपिक शुरू हुआ।



उद्देश्य : विलुप्त हो रहे खेलों को जीवंत करना।

इस आयोजन में करायी गई प्रतियोगितायें: बोरा रेस, जलेबी रेस,पटल दौड़,बैलून दौड़,80 मीटर की दौड़ , जुगल दौड़,सुई धागा, म्यूजिकल चेयर,लगोरी,लम्बी कूद,ऊँची कूद और गोला फेंक।

मिथिलेश कुमार - उमंग संचालक

रंगमंडली

सामुदायिक रंगमंच

12 वर्षों की यात्रा

वह नवम्बर 2013 की 15 तारीख थी जब हम नरेंद्रपुर रंगमंच की शुरुआत करने आये। आने पर पता चला कि परिवर्तन में अन्य कई इकाईयाँ काम करतीं हैं, - ***सेवा भारत*** तथा ***प्रथम शिक्षा*** की कुछ इकाईयां। हालाकि पहले भी गाँव नरेन्द्रपुर में नाट्य प्रदर्शन होते रहे हैं, लेकिन इन प्रदर्शनों में स्थानीय कलाकार सिर्फ दर्शक के रूप में उपस्थित रहते थे और इनका जुड़ाव नाटकों से नहीं था। मुझे याद है कि संजय उपाध्याय का विदेसिया, तनवीर अख्तर का गबर घिचोर और हबीब तनवीर के कुछ नाटकों का प्रदर्शन हुआ था। और इन प्रदर्शनों में, मै भी शामिल था। यह प्रस्तुतियां 2010 के पूर्व में ही हुईं।

इसके अलावा यहाँ संजय उपाध्याय द्वारा नाट्य कार्यशाला का भी आयोजन होता रहा था जिसमें स्थानीय युवा शामिल रहते थे लेकिन एक व्यवस्थित नाट्य दल का स्वरुप नहीं बन पाया था। शुरुआती दौर में इन नाटकों के प्रदर्शन सिर्फ दर्शकों के मनोरंजन और वातावरण निर्माण के लिए हुए और फिर धीरे धीरे दर्शकों की प्रतिक्रया देखते हुए महसूस हुआ कि सिर्फ नाट्य प्रदर्शनों से कुछ नहीं होगा क्योंकि रंगमंच आम जन के सुख दुःख को बयान करता है और उसकी व्याख्या भी तो उसे एक सशक्त डाइलॉग का माध्यम बनाना होगा।

2014, जनवरी तक मेरे सामने कोई अभिनेता नहीं था।

मैं कई गाँवों की कीर्तन मंडली रात-रात भर घूमा, उनके साथ भजन कीर्तन भी गाया। परिचय तो हुआ लेकिन मुझे अपनी रंगमंडली के अनरूप कोई दिखा नहीं। दरअसल हमें सिर्फ गाने-बजाने वाला व्यक्ति नहीं चाहिए था बल्कि दुनिया और समाज के बारे में चिंतन करने वाला व्यक्ति चाहिए था। धीरे धीरे मैंने परिवर्तन के हॉउस कीपिंग और प्रथम के कुछ विद्यार्थियों को लेकर एक नाटक- ***बकरी*** की शुरुआत की। किसी तरह यह नाटक प्रदर्शित हुआ। काफी दर्शक आये और नाटक को सराहा भी। इसका प्रदर्शन महिला समाख्या के एक कार्यक्रम में फरवरी 2014 में मुजफ्फरपुर में हुआ।

यहाँ से परिवर्तन सामुदायिक रंगमंच की शुरुआत हुई।

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर
लोग आते गए और कारवां बनता गया।

मैं स्वयं भोजपुरी भाषी हूँ, इसलिए शायद स्थानीय लोगों से जुड़ने और उनकी समस्याओं को समझने में मुझे आसानी हुई और लोग भी अपने बीच का ही समझने लगे।



परिवर्तन में हम सब ने मिलकर समझा कि सामुदायिक रंगमंच मूल रूप से क्या है? यह कैसे लोगो को एक साथ लाता है जिससे सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं। यह स्थानीय संस्कृति और परम्पराओं को जीवित रखने में मदद भी करता है और लोगों को अपनी रचनात्मकता और भावनाओं को व्यक्त करने का मंच प्रदान करता है। यह स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर भी देता है और विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को एक मंच पर लाता है- जिससे सामुदायिक बंधन मजबूत होते हैं।



समाज में व्याप्त असमानता, भेदभाव, लैंगिक हिंसा, शिक्षा की कमी और बाल अधिकार जैसे मुद्दों को देखकर रंगमंडली के गठन की सोच हमारे मन में आयी। हमने महसूस किया कि रंगमंच एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जिससे आमजन तक संवेदनशील मुद्दों को प्रभावी तरीके से पहुँचाया जा सकता है।

हमारी सोच



चुनौतियां





हमारा लक्ष्य

कुछ प्रदर्शनों के बाद समझ बनी कि नाटक भी एक तरह से मैनेजमेंट की मांग करता है और उसे भी एक अनुशासन में बांधना जरुरी है। इसलिए सामुदायिक रंगमंच (रंगमंडली) का एक लक्ष्य या विज़न बनाना आवश्यक था। इस मिशन विज़न को बनाने में परिवर्तन के मैनेजमेंट ने भी सहयोग किया और इसका मिशन विज़न कुछ इस प्रकार बनाया गया जो जन आकांक्षाओं, सामाजिक जरूरतों और लोक संस्कृति के संवर्धन के लिए आवश्यक रहे।

पहल एवं प्रयास

हमारी पहल थी रंगमंच के ज़रिए समाज में जागरूकता फैलाना और उन मुद्दों को सामने लाना जिन पर अक्सर बात नहीं होती। हमने नुक्कड़ नाटक, मंच नाटक और संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों से सीधे संवाद स्थापित करने का प्रयास किया।

- प्रत्येक वर्ष नाट्य उत्सव का आयोजन।
- राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे नाट्य उत्सवों में भागीदारी।
- स्थानीय लोक कला को पूरे देश में प्रचारित-प्रसारित करना।
- नुक्कड़ नाटक गांवों और गाँव के टोलों में प्रस्तुत करना।
- लोक नाट्य शैलियों और पारंपरिक गीतों को संजोना।
- स्थानीय कलाकारों के क्षमता विकास के लिए नाट्य कार्यशालाएं आयोजित करना।
- सामुदायिक समस्या पर नुक्कड़ प्रदर्शन करना।
- स्थानीय स्कूलों में नाट्य कार्यशालाएं एवं संगीत कार्यशालाएं आयोजित करना।
- नुक्कड़ प्रदर्शन के माध्यम से सामुदायिक समस्यायों पर जन संवाद आयोजित करना।

बदलाव

आज हमारी टीम ने 35 से अधिक नाटकों का मंचन कर लिया है। और देश के महत्वपूर्ण नाट्य उत्सवों में अपने स्थानीय लोक कलाकारों और लोक नाट्य शैलियों की पहचान कराई है।

नुक्कड़ नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से सामुदायिक समस्याओं पर जागरूकता बढ़ाने की पहल

नुक्कड़ नाटक, एक ऐसी नाट्य विधा है जो चौपाल या गाँव के किसी भी स्थान पर दर्शकों की आंखों में आँखें डाल कर प्रस्तुत होती है और इससे किसी भी सामुदायिक मुद्दे पर चर्चा करने का साहस जुटता है।

ऐसा इसलिए भी होता है कि नुक्कड़ का स्थान थ्री डाइमेंशनल होता है। अभिनेताओं के तीनों ओर दर्शक होते हैं और मंच की तरह दर्शकों से दूरी भी नही होती। इसलिए दर्शक अभिनेताओं और कहानी के बहुत करीब होते हैं। और जब उन्ही की कहानी उन्ही के गाँव में प्रस्तुत होती है तो उनके अंदर की ताकत को प्रोत्साहन मिलता है और वही ताकत अपनी समस्या और गाँव की समस्या को कह देने की प्रेरणा देती है। अक्सर हम अपनी और अपने गाँव की समस्या से निदान तो चाहते है लेकिन समूह में उसे कहने से कतराते हैं और वह समस्या और गंभीर होती जाती है। ग्रामीण यही सोचते हैं कि मैं ही क्यों बोलूँ?

परिवर्तन सामुदायिक रंगमंच की इस पहल से कुछ विषयों - स्वच्छता एवं साफ़ सफाई, शिक्षा, लैंगिक समानता एवं महिला हिंसा में ग्रामीण स्तर पर सुधार आया है, जो बेहद सुखद है। इन विषयों में आम जन जागरूक हुए हैं और सामुदायिक रंगमंच की इस पहल पर लोगों का भरोसा भी बढ़ा है।

परिवर्तन क्षेत्र के सभी गाँव ों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से साफ़-सफाई, शिक्षा, लैंगिक समानता, महिला हिंसा, एवं चुनाव प्रक्रिया तथा अन्य कुछ विषयों पर सैकड़ों नुक्कड़ों का प्रदर्शन किया जा चुका है। बदलाव चूंकि एक सतत प्रक्रिया है अतः निरंतरता से बदलाव भी हो रहा है।

बदलाव -हमने देखा है कि लोगों में जागरूकता बढ़ी है, विशेषकर युवा अब इन मुद्दों पर खुलकर बोलते हैं। कई गांवों में स्वच्छता के मामलों में सुधार आया है, लेकिन अभी भी सुधार की जरुरत है। लड़कियों की शिक्षा को लेकर रुचि बढ़ी है। रंगमंच के माध्यम से हमने सिर्फ संवाद ही नहीं किया है, बल्कि सामुदायिक भागीदारी में बढ़ोत्तरी भी देखी है।








मंच नाटक के माध्यम से स्थानीय कलाकारों को देश के कोने- कोने तक पहुँचाना - एक पहल।

प्रारंभ में दर्शक नाटक को सिर्फ मनोरंजन का साधन समझते थे। लेकिन धीरे धीरे दर्शकों ने नाटक देखने का अनुसाशन विकसित कर लिया।

- समय पर आना
- नाटक को सिर्फ मनोरंजन का साधन न समझना
- नाटक के बीच में आवा-जाही ना करना
- मोबाइल फ़ोन को स्विच ऑफ रखना

इन सभी बातों में थोडा समय लगा लेकिन आज वही दर्शक समय के पाबंद हो गए हैं। इन 10 वर्षों की रंगमंचीय यात्रा में सामुदायिक रंगमंच के अभिनेताओं और निर्देशकों ने बहुत सीखा और सिखाया है।

अभिनेता को भी सीखना होता है, उच्चारण, भाषा, शरीर की भाषा।

सुविख्यात नाट्यकर्मी तनवीर अख्तर ने कई वर्कशॉप्स लेकर अभिनेताओं के क्षमता विकास पर काम किया।

महिला अभिनेत्री

प्रारंभ से ही सामुदायिक रंगमंच में महिला शामिल नहीं हो पा रही थीं, इसलिए महिला चरित्रों की भूमिका पुरुष ही करते थे, इसका कारण समाज में नाट्य विधा के प्रति सम्मानीय सोच का नहीं होना था। जबकि स्थानीय लडकियां रंगमंच से जुड़ना चाहती थीं लेकिन उनके अभिभावक उन्हें जुड़ने से मना करते थे। धीरे-धीरे अभिभावकों और उनकी सोच में नाट्य प्रदर्शन देखने के बाद बदलाव आया और लड़कियां भी रंगमंडली से जुड़ने लगीं। अगर हम अपने 10 वर्षों की रंगमंच यात्रा को देखें तो इन 10 वर्षों में 10 गाँवों से एक या दो साल के लिए 70 लड़कियों ने सामुदायिक रंगमंच में काम किया। जबकी पुरुष कलाकार लगभग 160 के आसपास रहे हैं। परिवर्तन के इस पहल से सामुदायिक रंगमंच के स्थानीय कलाकारों ने अपनी कला का और अपने गीतों, नाटकों का प्रदर्शन पूरे देश में किया है।





सर्जरी, अपहरण भाई चारे का (14/10/2014) पंच लाइट (अक्टूबर 2014)

टू कालिंग उर्फ़ शंकर भांड (13/11/2016), सईयाँ भय कोतवाल (16/11/2016) बिदेसिया (02/11/2016),

जिन लाहौर नही देख्या (26/11/2018), कंजूस(25/01/2018), अमली (20/06/2018), ताज महल का टेंडर (29/01/2018), खबसूरत बहू (2018), तुम सम पुरूष ना मो सम नारी (2018), जीवन लीला, खुदा हाफ़िज, हमें आगे बढ़ने दो, ग्रामसभा, ऐसे - ऐसे, तमाशा, सवासेर गेहूं, ओक्का बोक्का, औरत, हंसमुख नवाब, बड़े भाई साहब, हत्यारे, मुझे कहाँ ले आये कोलम्बस, अलीगढ के ताले, मक्खी (02/10/2018), कुत्ते (2018), अबहियो से चेतs

नंगा राजा, बापू के सपने (02/10/2020, दगा हो गय बालम (11/11/2020),

हरसिंगार (जून 2022) आदत (15/03/2022) सदाचार के ताबीज (2022),

हमारी जननी (29/03/2024), तीसरी कसम (14/07/2024), दो कौड़ी का खेल (18/11/2024) अब तो जागो (15/10/2024), चेखव की दुनिया, अपना ताकत अपना वोट, गणतंत्र का महापर्व (24/04/2024)

2014 2016 2018 2020 2022 2024

2015 2017 2019 2021 2023 2025

गबरघिचोर (08/10/2015), टैडी बीयर, आला अफसर, रामलीला (22/11/2015)

मंथन(2017), मिट्टी का जादूगर (2017), मै बिहार हूँ (22/09/2017), बैर के अंत (07/11/2017), मोटे राम का सत्याग्रह (2017), चक्रधर पंडित (09/11/2017), गबरघिचोरन के माई (2017), बेटी बेचवा (05/08/2017), गंगा स्नान (21/07/2017),

थैंक्यू बाबा लोचनदास (2019), होरी (16/06/2019),

बाबूजी (24/11/2021), दुविधा (25/11/2021),

पुत्र वध, भाई बिरोध (11/07/2023), अंचरा पर नाच (05/11/2023), खुली आँख का सपना (26/02/2023),

भिखारी गाथा (30/03/2025),





















14 **वर्ष 2014 से लेकर 2025 मार्च तक आमंत्रण पर बाहर के प्रदर्शन**



बाल रंगमंडली

बच्चों की भाषा और उनके आत्मविश्वाश को बढ़ावा देने की एक पहल

निरंतर स्थानीय स्कूलों का भ्रमण करने पर और उनके साथ कई कार्यक्रमों को करने पर यह महसूस करने का अवसर मिला है कि चाहे स्कूल की शिक्षा व्यवस्था हो या स्कूल के पठन पाठन का तरीका, स्कूल के बच्चों की रीडिंग क्षमता हो या साफ़-सफाई की व्यवस्था सभी विषयों के प्रति समुदाय और स्कूलों में जागरूकता की कमी रही है।

अतः सामुदायिक रंगमंच ने बच्चों के लिए **2016** से एक रोचक पहल की। बच्चों के एक नाट्य दल बाल रंगमंडली का गठन हुआ और इसके माध्यम से बच्चों की भाषा, उनके आत्मविश्वास, उनकी रचनात्मकता और उनकी कल्पनाशक्ति के विकास के लिए नाटक करने की शुरुआत हुई।

बदलाव - नाटक करना चूंकि एक सामूहिक गतिविधि है और इसमें बच्चे अपने को खुले दिल से मंच पर अभिव्यक्त करते हैं तो हमने पाया कि वे अधिक आत्मविश्वासी हो जाया करते हैं।अब बच्चे खुल कर सवाल करते हैं और तर्क शक्ति से स्थितियों को समझने की कोशिश करते हैं। वे अनुशासन के पाबंद भी हो गए हैं और उनकी रचनात्मकता इस के पश्चात उड़ान भरने लगी है।

परिवर्तन नाट्य उत्सव 2025

दिनांक – 28 से 30 मार्च 2025। दर्शक – 450-700 लोग उपस्थित रहे

पहला दिन: रंगसंगीत – संगीत से सजी एक रंगमयी संध्या

परिवर्तन थिएटर फेस्टिवल का भव्य शुभारंभ रंगसंगीत के साथ हुआ, जहाँ संगीत और थिएटर का खूबसूरत संगम देखने को मिला। पहले दिन का आयोजन नाट्य संगीत को समर्पित था, जिसमें थिएटर से जुड़े गीतों की प्रस्तुती हुई। समुदाय के लोग बदलाव के गीतों को पसंद करते हैं यह इस कार्यक्रम से पता चला। सभी गीतों की समाप्ति के बाद दर्शकों ने तालियाँ बजायीं।इस कार्यक्रम से यह अनुभव हुआ कि इस शुरुआत को हम और बेहतर करके जारी रख सकते हैं और परिवर्तन गीतों के माध्यम से भी हम आम जन को सन्देश दे सकते हैं।

29 मार्च

29 मार्च को फणीश्वर नाथ रेणू की कहानी मारे गए गुलफाम उर्फ़ तीसरी कसम आधारित नाटक "तीसरी कसम"की प्रस्तुति हुई। इस नाटक का निर्देशन देश के प्रसिद्द नाट्य निर्देशक श्री संजय उपाध्याय ने किया। इस नाटक को दर्शकों ने खूब सराहा। इस नाटक में 15 गाँवों से 800 दर्शक शामिल हुए।

30 मार्च

30 मार्च को लोक नाटककार और अभिनेता, लेखक के जीवन पर आधारित नाटक "भिखारी गाथा" की प्रस्तुति की गयी। भिखारी ठाकुर के नाटकों और उनके जीवन पर आधारित नाटक को दर्शकों ने खूब पसंद किया।

स्कूल स्तरीय संगीत कार्यशाला

(19 से 26 नवम्बर 2024)

इस कार्यशाला के माध्यम से बच्चों के स्कूल में गाये जाने वाले प्रार्थना गीत, राष्ट्र गान, टेक्स्टबुक में शामिल कविताएं, बिहार गीत, बिहार प्रार्थना गीत के साथ साथ स्थानीय परिवेश की विभिन्न कलाओं जैसे- लोकगीतों, लोकनाट्यों, को समझाने तथा अपने अनुभवों के आधार पर मौलिक सृजन करने एवं उनके सीखने के स्तर को बढ़ाने के अधिकाधिक अवसर प्रदान करने का प्रयास किया गया।

- विद्यार्थियों को नए माध्यमों और तकनीकों से अवगत कराया गया जो उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को और मजबूत बनाने का काम करते हैं।
- संगीत कला के माध्यम से अपने स्थानीय परिवेश के साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों और सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करना।
- अपने क्षेत्र के कलाकारों के जीवन एवं कार्य से परिचित कराना।
- लोक कलाओं, क्षेत्रीय कलाओं एवं सांस्कृतिक घटकों की जानकारी के अवसर प्रदान करना जिससे वे राष्ट्रीय धरोहर एवं सांस्कृतिक विविधता की सराहना कर सकें।
- प्रकृति एवं कलाओं के मूल तत्त्वों में उपस्थित सौंदर्य की प्रशंसा करने की क्षमता परिष्कृत करना।
- कला के माध्यम से समता की प्रस्तुति करना।
- कार्यक्रम में बच्चो की उपस्थिति – 80 रही, स्कूलों की संख्या – 8 रही।



आशुतोष मिश्रा - रंगमंडली संचालक

जागृति
महिला समाख्या

महिला सशक्तिकरण

10 वर्षों की यात्रा

जागृति महिला समाख्या की एक दशक की यात्रा: संघर्ष की स्मृति और बदलाव के अनेक पड़ाव

हमारी सोच



2015 -2025, इस दशक को परिवर्तन के महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम ' जागृति महिला समाख्या ' के लिए एक किशोर वय की उम्र से शुरू होकर युवा अवस्था तक पहुँच जाने की यात्रा का एक रोमांचक कालखंड माना जा सकता है।



महिलाओं की सोच में और महिलाओं के लिए सामाजिक सोच में बदलाव लाना।



चौखट से बाहर निकलने की जिद और जरूरत ;



बनने -बिगड़ने, टूटने - फूटने और बिखरने की प्रक्रिया की शुरुआत :



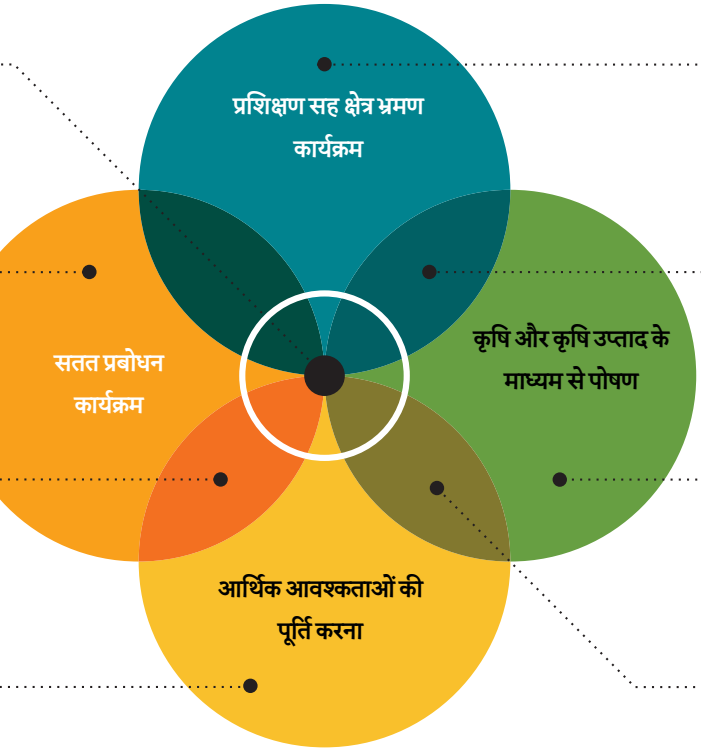
शिक्षा की प्राप्ति

महिला समाख्या कार्यक्रम की शुरुआत 1990 के दशक में देश और बिहार के कुछ जिलों में पिछड़े वर्ग की अशिक्षित, प्रताड़ित, आर्थिक तौर पर पराश्रित और सांगठनिक तौर पर विश्रृंखलित महिलाओं के लिए की गयी थी।जिसका सबसे बड़ा उद्देश्य था **महिलाओं की सोच में और महिलाओं के लिए सामाजिक सोच में बदलाव लाना।**

हमने भी अपने आस पास ऐसी ही महिलाओं को 'अपनी ही जिन्दगी में रोज डूबते और उतरते देखा था। स्थानीय समुदाय की रूढ़िगत जीवन जीने वाली महिलायें अपने विचारों और मूल्यों पर अपना जीवन जीना तो चाहती थी पर इसके लिए जैसे वह किसी आन्दोलन या पहल की प्रतीक्षा में थी।पुरुष वर्चस्व और प्रभाव वाला समाज उन महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से नहीं देख रहा है यह हम देखते और समझते थे लेकिन अब हम यह भी देख-समझ रहे थे **साधन विहीन गाँव की यह साधन विपन्न महिलाएं,** ख़राब सोच को चुनौती दे रही हैं।



पहल एवं प्रयास



शराब और अन्य नशीले पदार्थों और कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए चलाया गया व्यापक अभियान



पीड़िता को न्याय मिले इसके लिए रणनीतिक कार्यक्रम



समूह की महिलाओं को कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुलभ कराने का कार्यक्रम



महिला हिंसा की समाप्ति और संगठन का सुदृढ़ीकरण :



यह कहा जा सकता है कि परिवर्तन जिस नए समुदाय को गढ़ने का प्रयत्न कर रहा है उसमें महिलाओं को स्वयं और समुदाय के बारे में निर्णय लेने, उसके अनुरूप कार्ययोजना बनाने और उसे लागू करने का अवसर होना प्रारंभिक शर्त है। जागृति महिला समाख्या कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर उभर रहे महिला नेतृत्व को संपोषित करते हुए उस सकारात्मक परिणाम की ओर बढ़ रहा है जहाँ महिला हिंसा की घटनाएँ गुजरे जमाने की बात रह जाएगी। हम एक शिक्षित, आर्थिक तौर पर स्वावलंबी और वैचारिक तौर पर मुखर महिलाओं से सुसज्जित महिला समूह को बनाने का प्रयास कर रहे हैं जो आज की, कल की और भविष्य की सामाजिक चुनौतियों का हल निकालने के लिए सतत अपनी क्षमता का वर्धन कर सके।

परिवर्तन की स्थापना के वर्षों से ही महिला सशक्तिकरण की पहल शुरू हो गयी थी।

चुनौतियां

चौखट से बाहर निकलने की जिद और जरूरत;

आर्थिक तौर परावलम्बी महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला हिंसा के विरूद्ध प्रतिकार, पंचायत राज संस्थाओं में महिला नेतृत्व का सबलीकरण जो कभी एक दिवा स्वप्न लग रहा था उसे अब हकीकत में जमीन पर उतारने की प्रक्रिया की शुरुआत हो चुकी थी।गाँव –गाँव और घर –घर में जाकर उन महिलाओं को इस मुहिम में आकर अपनी किस्मत को आजमाने और बदलने के लिए प्रेरित किया गया। नई बहुओं को परिवार और परिवार को ये बहुएं अपने अलग –अलग नजरिये से देखती रही थी पर कुछ कर दिखाने की जिद और चुनौती सामने खड़ी थी।

हमें इस समय तक ' **हाशिये पर एक हसरत के साथ खड़ी** ' इन महिलाओं के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर काम करने वाली वैसी 15 महिलाएं मिल चुकी थीं जो तमाम तरह की चुनौतियों और परेशानियों के बाबजूद बड़े बदलाव का वाहक बनने के लिए पूरी तरह तैयार थीं।

पहल एवं प्रयास

पूरी टीम के सम्मिलित प्रयास के साथ चौखट के उस पार घर के भीतर घूँघट में ठीक एक हाथ की दूरी पर खड़ी महिला/महिलाओं का हाथ पकड़कर वर्जनाओं की चहारदीवारी के अन्दर से बाहर खुले दरवाजे पर निकालने का सिलसिला ऐसा शुरू हुआ कि हजारों महिलाएं उन सभी स्थानों पर दिखाई देने लगीं जहाँ वह इससे पहले इतनी बड़ी संख्या में कभी नहीं देखी गयी थीं।विद्यालय के प्रांगण में, महिला समूह की बैठकों में, महिला हिंसा की हुई किसी घटना को समझने, उसका निदान करने और निर्णय देने में, पंचायत की वार्ड सभा और ग्राम सभा की बैठकों में, पुलिस थाने में और प्रशासन के समक्ष अपनी किसी मांग के समर्थन में।

बनने –बिगड़ने, टूटने - फूटने और बिखरने की प्रक्रिया की शुरुआत : जैसे एक कुम्हार के द्वारा अपनाई जाती रही अत्यधिक सतर्कता के बाबजूद मिट्टी के कच्चे, अधपके और पके बर्तन टूटते रहते हैं वैसे ही इन महिला समूहों के साथ हुआ।अपने गठन के दो वर्ष के भीतर अर्थात वर्ष 2016 के उत्तरार्ध में हमें अपने कुछ साथियों के नियमित संपर्क से वंचित होना पड़ा।इसके कई कारण कहे गए पर सबसे बड़ा कारण था एक बार फिर से पुरुषों की प्रतिक्रियावादी नीति जो प्रतिशोध के स्वरुप में हमारे सामने आ गयी थी।गाँव के अराजक तत्व और महिलाओं के शोषक तत्व नहीं चाहते थे कि महिलाएं संगठित और सशक्त बने।सामुदायिक विषयों और मामलों में हाथ डालें। इसके अलावा जो कुछ महिलाएं किसी परंपरागत स्वार्थ के वश में आकर महिला समूह से जुड़ी थी उनका भी मोहभंग हुआ और वह पहले की तरह अपने 'बैरक' में लौट गईं।





आज हमारे साथ दस सहयोगिनियां कार्य कर रही हैं

- अनुसूचित जाति की 3
- अनुसूचित जन जाति की 1
- अन्य पिछड़े वर्ग की 5
- मुस्लिम समुदाय से 1

जीरादेई के 06 (नरेन्द्रपुर, भरौली, जामापुर, चंदौली-गंगौली. गडार और मियां के भटकन) और आंदर प्रखंड के 02 पंचायत (बलिया और भवराज पुर) के अंतर्गत आने वाले 47 गांवों के हरेक टोले में महिला समूह बनाने की हमारी कोशिश और गाढ़ी होती यदि हम समय रहते चीजों को समझ पाते और हस्तक्षेप करते ! अब हमारे साथ वही महिलाएं साथी -सखी के रूप में रह गयी थीं जो आगे भी वर्षों तक साथ बनी रही।एक अनुमान के अनुसार अब हम *5000 से अधिक महिलाओं और किशोरियों* के साथ कार्य कर रहे हैं।

नारी जुटान

इस कार्यक्रम का आयोजन 10 वर्ष पूर्व से किया जा रहा हैं। यह कार्यक्रम हमारे प्रयासों का एक प्रतिबिम्ब है।

इस कार्यक्रम का उदेश्य हमरे कार्यक्षेत्र की आठों पंचायत की महिलायें एक साथ एक छत के नीचे एक साथ खड़े होकर अपने समूह एवं संगठन की ताकत महसुसू करें। शुरुआत से अब तक इस कार्यक्रम में अनेक महिलायें जुड़ गयी हैं।हाल के वर्षों में लगभग एक हज़ार से ज़्यादा महिलाओं एवं किशोरियों की सहभागिता रहती हैं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए गीत, संगीत, नुक्कर नाटक एवं खुली बातचीत की जाती है जिससे महिलायें आपस में चर्चा करें और सामूहिक भगिनीवाद का निर्माण करें।







पहल एवं प्रयास

शिक्षा की प्राप्ति, महिला हिंसा की समाप्ति और संगठन का सुदृढ़ीकरण : हमने इसके लिए कई प्रयास किये हैं।ये प्रयास कई कार्यक्रमों और गतिविधियों के रूप में अनेक स्तरों पर शुरू किये गए ; समूह के स्तर पर, गाँव के स्तर पर, पंचायत या संकुल के स्तर पर और सभी महिलाओं के साथ परिवर्तन के स्तर पर।

इन कार्यक्रमों को पांच प्रकार के कार्यक्रमों में बांटा जा सकता है।

प्रशिक्षण सह क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम

जिसके अंतर्गत हमने नियमित अंतराल पर अपनी महिला कार्यकर्ताओं जिसे हम सहयोगिनी कहते हैं को विषय -वस्तु आधारित प्रशिक्षण किसी बाहरी प्रशिक्षक से दिलवाया ताकि उनका क्षमता वर्धन हो सके।प्रशिक्षण के उपरांत इन कार्यकर्ताओं को कई अन्य जिलों में फील्ड का अनुभव प्राप्त करने के लिए भेजा गया ताकि वहां वे महिला सशक्तिरण के लिए चलाये रहे कार्यक्रमों से सीख हासिल कर सकें। इसी तरह हमारी महिला समूह की जो नेतृत्व कर्ता हैं उन्हें भी समय -समय पर प्रशिक्षित किया गया ताकि वे अपने समूह के माध्यम से अपने समुदाय की समस्याओं का निराकरण कर सकें।

समूह की महिलाओं को कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुलभ कराने का कार्यक्रम

जिसके अंतर्गत हमारी टीम का यह प्रयास रहा है कि सरकार प्रायोजित जो कार्यक्रम चल रहे है उसका लाभ हमारी समूह की महिलाओं को अधिक से अधिक मिले।यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि हमारी समूह की **70 प्रतिशत महिलाएं अनुसूचित जाति** समूह से आती है।**25 प्रतिशत अन्य पिछड़े वर्ग** से और **05 प्रतिशत महिलाएं सामान्य वर्ग** से आती है जिसमें **3 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएं** है।इसमें से ज्यादातर महिलाएं आर्थिक रूप से बेहद कमजोर पृष्ठ भूमि से आती है।एक अनुमान के अनुसार इन दस वर्षों में हमारी टीम और पंचायत राज प्रतिनिधियों के संयुक्त प्रयास से **1000 से अधिक महिलाओं** को किसी न किसी कल्याणकारी कार्यक्रमों से जोड़ने में सफलता मिली है।विधवा और वृद्धाओं के लिए दिए जाने पेंशन, कमजोड़ वर्ग के लोगों के लिए आवास और राशन कार्ड के माध्यम से गरीब लोगों को मुफ्त और सस्ते दामों पर अन्न मुहैया कराने वाले कार्यक्रम का इसमें महत्वपूर्ण योगदान है।इसके अलावा हमारा एक और बड़ा महत्वपूर्ण लक्ष्य है, वह है सभी परिवारों के पास अपना एक शौचालय हो।क्योंकि यह महिलाओं को कई शारीरिक बिमारियों और मानसिक यंत्रणा से मुक्ति प्रदान करता है।

पीडिता को न्याय मिले इसके लिए रणनीतिक कार्यक्रम

इसके अंतर्गत हमारी टीम पीडिता के लिए न्याय सुनिश्चित करने के लिए हर उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह के सामने तब तक डटी रही जब तक पीडिता को न्याय नहीं मिल गया।हमारी टीम ने इस कार्यविधि में **200 से अधिक महिला हिंसा के मामले का समाधान किया**।महिला हिंसा के मामले में दोनों पक्ष के बातो को सुना और समझा जाता हैं। बातचीत के दौरान समस्या का समाधान देने का प्रयास किया जाता ही।दोनों पक्ष के सहमती से एक बॉन्ड बनाया जाता हैं और इसका उल्लंघन करने पर दोषियों को सामाजिक और कानूनी रूप से सजा दिलवाई जाती है और परिवार के भीतर अब तक असुरक्षित रही महिला को सुरक्षा प्रदान की जाती है।अपने अधिकारों के लिए महिलाओं ने समूह के माध्यम से अपनी नियति को बदलने का ठाना है। परिणामतः आत्म सम्मान, आत्मविश्वास और आत्मबल के साथ जीना उनके लिए संभव हो सका।आज हमारे साथ **160 से अधिक महिला समूह और 40 से अधिक किशोरी समूह** जुड़े हैं।

कृषि और कृषि उप्तााद के माध्यम से पोषण और आर्थिक आवश्कताओं की पूर्ति करना।

इसके अंतर्गत हम अपनी महिला समूह के इच्छुक महिलाओं को हरियाली कृषि ज्ञान के माध्यम रबी, खरीफ फसल और सब्जियों के बीज, पशु चारा के बीज उपलब्ध करवाते हैं और इसके खेती करने के विषय में जानकारी देते है। **इसके लिए सहयोगिनी एवं समूह की महिलाओं को समस्तीपुर भिजिट भी कराया गया ताकि वह कम लागत में एक साथ कई फसल को उगा सके।** इसके लिए उन्हें नई-नई तकनियों से अवगत कराया गया। ताकि वह खेती से कुछ आर्थिक लाभ अर्जित कर सके।पिछले वर्ष 2024 में 72 महिलाओं ने मशरूम की खेती करते हुए परिवार के पोषण की अवश्याताओं को पूर्ति की है और आगे भी खेती में नए प्रयोग के प्रति उत्साहित दिख रही हैं।

सतत प्रबोधन कार्यक्रम

जिसके अंतर्गत समूह की महिलाओं को साक्षर होने और किशोरियों की शिक्षा को पहली प्राथमिकता के रूप में बढ़ाने के लिए उत्प्रेरित किया जाता रहा है।हमारे प्रयासों के फलस्वरूप अब **हमारे समूह की 15 महिलाओं में कम से कम 10 महिलाएं साक्षर हो गयी है** जो कार्यक्रम के प्रारंभिक दिनों में **केवल 2-3** थी।इसी प्रकार सहयोगिनी और समूह की महिलाओं के संयुक्त प्रयास से लड़कियों / किशोरियों की शिक्षा की स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार करने के लिए हमने गंभीर प्रयास किये है।कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय में अधिक से अधिक लड़कियों का नामांकन हो सके इसके लिए हम प्रत्येक वर्ष नए अकादमिक वर्ष शुरू होने के समय योग्य छात्राओं और उनके परिवार के सदस्यों से लगातार संपर्क में रहते है ताकि इन किशोरियों को एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हासिल हो सके।

बदलाव

अब हमारे साथ वही महिलाएं साथी-सखी के रूप में रह गयी थीं जो आगे भी वर्षों तक साथ बनी रही।एक अनुमान के अनुसार अब हम **5000 से अधिक महिलाओं और किशोरियों** के साथ कार्य कर रहे हैं।

01

हमने किशोरियों की शिक्षा की मौजूदा स्थिति को दस वर्ष पूर्व में किये गए आंतरिक सर्वे और विद्यालयों के नामांकन रजिस्टर से प्राप्त सूचनाओं को एक साथ रखकर अध्ययन किया तो कई बहुत सकारात्मक परिणाम मिले।

02

इसके अलावा समुदाय के स्तर पर काम करते हुए भी हमने कई महत्वपूर्ण बदलावों को चिन्हित किया है।इसके अनुसार **दस वर्ष पहले 10 प्रतिशत के आसपास किशोरियां ही मेट्रिक तक पढाई पूरी करती थी।जबकि आज 90 प्रतिशत के करीब किशोरियां मैट्रिक तक की पढाई पूरी कर चुकी है।**

03

इसी तरह सरकारी और निजी विद्यालयों में नामांकित बच्चों के अनुपात के मामले में भी **लड़कियां या तो बराबरी में है या बराबरी से अधिक** हैं।विद्यालय में उपस्थिति के मामले में तो लड़कियों का रिकॉर्ड और भी शानदार कहा जा सकता है।

04

जहाँ तक उपलब्धियों की बात है हमारे कार्यक्षेत्र के कई गाँव है जहाँ की लड़कियों ने शानदार उपलब्धि हासिल की है।**मसलन बेल्ही गाँव से ही 9 ऐसी लड़कियां है जो बिहार पुलिस में कार्यरत हैं**।हमारी अपने महिला समूह से जुड़ी महिलाओं की बेटियों भी कई सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्यापन का कार्य कर रही है।

05

इसके अतिरिक्त शिक्षा के दो विशद उद्देश्यों **जागरूकता और अधिकार बोध** के विषय में समूह की सभी महिलाओं को स्वास्थ्य, प्रजनन स्वास्थ्य, स्वच्छता के विविध पहलुओं और पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभावों पर अद्यतन जानकारी देकर उन्हें सजग और संवेदनशील बनाया गया जिससे वे अन्य महिलाओं के साथ समुदाय के स्तर पर जागरूकता अभियान चला सकें।

06

शराब और अन्य नशीले पदार्थों और कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए चलाया गया व्यापक अभियान इसी प्रकार का कार्यक्रम था जिसको लेकर समुदाय के बीच कई बार जन जागरूकता अभियान चलाये गए।

07

इसी प्रकार मानवाधिकार के अंतर्गत आने वाले विभिन्न अधिकार और भारतीय संविधान प्रदत्त महिलाओं के लिए जो अधिकार हैं उसके बारे में उन्हें जानकारी दी गयी और उन्हें उनका उपयोग करने के लिए उत्प्रेरित किया गया।

अनिल चन्द्र झा - जागृति महिला समाख्या संचालक

आजीविका
10 वर्षों की यात्रा



वर्ष 2015 में आजीविका इकाई की परिकल्पना हुई। श्री दुर्गा जिन्होंन नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी से पढ़ाई की और बाद में विभिन्न एन.जी.ओ. से जुड़कर, कपड़े बनाने और सँवारने की तकनीक में अनुभव हासिल किया इसके प्रथम मेन्टर रहे हैं। क्षेत्र की महिलाओं को आर्थिक रूप से सबल बनाने और क्राफ्ट के क्षेत्र में नई पहचान दिलाने का यह प्रयास है।

यही ध्येय परिवर्तन की आजीविका इकाई के अंतर्गत क्रियाशील सिलाई केंद्र का है। आज लगभग 160 महिलाएं इस केंद्र से जुड़ी हुई हैं। यह वे महिलाएं हैं जो कभी चार दिवारी के अन्दर रहती थीं लेकिन आज यही महिलाएं पूरे आत्मविश्वास के साथ नियमित रूप से परिवर्तन आती हैं एवं अपना प्रतिदिन का काम पूरा करके सुरक्षित घर जाती हैं।

संचालक दुर्गाजी कहते हैं, -"शुरू शुरू में महिलाओं को परिवर्तन परिसर आकर, प्रशिक्षण लेने को प्रेरित करने के लिए हमें बार-बार महिलाओं के घर जाकर, अनुरोध करना पड़ता था। परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बैठक कर उनको अपनी योजना में साझीदार बनाना पड़ता था, तभी जाकर महिलाओं को परिसर आने की अनुमति मिलती थी। लेकिन आज कई महिलायें प्रशिक्षण पाने को इच्छुक हैं और वे एक बड़ी वेटिंग लिस्ट का हिस्सा हैं।

आज हम सतत आजीविका के इस क्षेत्र को स्थायी करने का प्रयास कर रहे हैं और धीरे धीरे अपने काम को विस्तार दे रहे हैं। अभी डीपीएस पटना, लुधियाना, पुणे और कोयम्बटूर के साथ साथ गया और मुज्जफरपुर के स्कूलों का आर्डर भी हम पूरा करते हैं। भविष्य में हमें कोलकाता का भी आर्डर मिलना है, जिसके लिए हम अपनी तैयारी शुरू कर चुके हैं। इस साल हमने नई छलांग लगाई और ट्रैकसूट बनाना शुरू किया है। आगे ब्लेज़र और टीशर्ट बनाने की भी योजना है।

गौर करने वाली एक बात जो मैं रेखांकित करना चाहता हूँ वह यह है कि परिवर्तन कार्यक्षेत्र की महिलाओं में सालाना साइकिल रेस के बाद काफी बदलाव हुए। महिलाओं ने साइकिल चलाना सीखना चाहा जिससे उनकी आवाजाही की दिक्कत खत्म हो और उनकी निर्भरता दूसरे लोगों पर कम हो। यह सबलता हासिल करने की बात थी। महिलाओं ने न्यूनतम लोन लेकर साइकिल खरीदी और परिसर पर स्वतंत्र रूप से आने लगीं और प्रशिक्षण पाने लगीं।

महिलाओं को एक स्वस्थ वातावरण में काम देना और उन्हें आगे बढ़ाना मेरा प्रमुख प्रयास है और इस काम में पूरी परिवर्तन टीम मेरे साथ है।

संजीव जी की सोच बहुत सराहनीय है, मैं देखता हूँ कि ऐसी सोच बहुत कम लोग रखते हैं। मैं शुक्रगुज़ार हूँ उनका कि काम को लेकर मेरी भी सोच का वे समर्थन करते हैं और हम मिलकर सकारात्मक ढंग से आगे बढ़ रहे हैं।"



पहल एवं प्रयास - सिलाई इकाई

1. जनवरी 2016 में पहली 22 मशीनें खरीदी और लगायी गईं
2. 18 फ़रवरी 2016 को 20 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया
3. दूसरी बार 2 मार्च को अन्य 20 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया
4. व्यावसायिक उत्पादन जुलाई 2016 को शुरू हुआ
5. 2018 में 10 और मशीनें लगायी गईं जिनमें कुछ विशिष्ट स्तर की थीं
6. अभी हमारे पास, 50 मशीनें हैं जिनमें से कंसाई विशिष्ट मशीन, नीडलचेन स्टिच मशीन, बारटाक मशीन और बटन होल मशीन भी है
7. 2023 में ट्रैक सुट्स बनने शुरू हुए
8. 2024 में ब्लेज़र का उत्पादन शुरू हुआ
9. आज हम लगभग 80,000 पीस सालाना बनाते हैं
10. इनमें 8 डीपीएस स्कूलों की पोशाक, ट्रैक सूट, ब्लेज़र शामिल हैं
11. तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की पोशाक भी हम तैयार करते हैं
12. आज इस इकाई में 99 महिला कारीगर और 7 स्थायी सदस्य हैं
13. हम जल्द ही निटवियर (ऊनी बुनाई) शुरू करने वाले हैं

सिलाई





बदलाव

- इकाई में 37 महिलायें और किशोरियां हैं, जो आसपास के 15 गाँवों से रोज आते जाते हैं।
- इकाई से 05 की.मी से 10 की.मी तक की दूरी तक की महिलायेँ और किशोरियाँ आती जाती हैं।
- 3500 रूपए प्रति माह औसतन सभी बुनकरों को प्राप्त होता है।

बुनाई

इस इकाई का उद्देश्य हथकरघा अर्थात स्वदेशी को बढ़ावा देना और उसे विशिष्ट कौशल की तरह संरक्षित करना है।

सोच

यह इकाई ग्रामीण महिलाओं को रोजगार से जोड़कर शारीरिक मानसिक एवं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से स्थापित की गई। सिलाई इकाई के साथ मिलकर यह इकाई बाज़ार में बिकने वाले उत्कृष्ट कपड़ों को तैयार करती है।

चुनौतियां

- हथकरघा के लिए कुशल कारीगरों की कमी सबसे बड़ी चुनौती रही।
- ग्रामीण छेत्र में महिलायों को इन सभी से जोड़ना और इन चीजो को अनुशासन में ढालना, सिखाना बहुत कठिन रहा है।

उत्पाद

शुरुआत में, थान के कपड़े बनाये जाते थे क्योंकि इसमें काम करने वाली महिलाओं और किशोरियों के लिए बुनाई का काम बिलकुल नया था। ऐसा काम यहाँ की महिलाओं और किशोरियों ने कभी नहीं देखा था। अतः सबसे





पहले बुनाई का सारा काम सिखाया गया। उसके बाद धीरे धीरे अनेक कौशल कार्यशालाएं कारवाई गईं जिन्होंने सभी बुनकरों के भी आत्मविश्वास का सनचार किया। आज सभी बुनकर-कुरता, पायजामा, सारी, दुपट्टा, गमछा, टावेल इत्यादि का उत्पादन करते हैं।

बदलाव

आज क्षेत्र की महिलायें और किशोरियाँ इकाई से जुड़ने के लिए स्वयं पहल करती हैं। शुरू शुरू में बुनकर थान के कपड़े को बुनते थे लेकिन आज वे नए नए डिजाइनों को आसानी से बना लेते हैं। बाज़ार में जाने से पहले कपड़ों को इस्त्री कर फिनिश किया जाता है। हथकरघा की विशिष्टता से अब सब परिचित हो रहे हैं और भारत के कोने कोने से बुनकरों को सराहना मिल रही है।

आगे का लक्ष्य

इकाई का मुख्य लक्ष्य अपनी समृद्ध संस्कृति को संरक्षित करते हुए बुनकरों को सशक्त बनाना है।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस

क्षेत्र में बुनाई इकाई को प्रोत्साहित करने के लिए और कारीगरों का सम्मान करने के लिए परिवर्तन ने भी हाल के वर्षों में हथकरघा दिवस मनाना प्रारंभ किया है। बुनाई की शुरुआत क्यों और कैसे हुई ? "राष्ट्रीय हथकरघा दिवस" क्यूँ मनाया जाता है ? हथकरघा देश की बेरोजगारी दूर करने में और समाज को सशक्त बनाने में अपनी भूमिका कैसे निभाता है? ऐसी अहम् बातों पर इस दिवस पर बुनाई एवं रंगाई से जुड़ी महिलाओं एवं किशोरियों का ध्यान केन्द्रित करवाया जाता है। इस कार्यक्रम से उन्हें कार्यो को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है ।

इस वर्ष इस कार्यक्रम में 60 लोग उपस्थित हुये। कुछ सिलाई इकाई की महिलायें इस कार्यक्रम की शुरुआत में आईं लेकिन थोड़े समय के बाद चली गईं। इस कार्यक्रम में बुनाई एवं रंगाई से जुड़े लोग अंत तक उपस्थित रहे। मंच सञ्चालन का कार्य दो किशोरियों बन्दना (बुनाई इकाई) एवं काजल (रंगाई इकाई) ने किया।

बुनाई इकाई की किशोरियां एवं महिलायें :- सबसे पहले बुनाई इकाई की किशोरियां एवं महिलाओं को कार्यक्रम की शुरुआत "चरखवा के टूटे न तार"गीत से करने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया। इस गीत की तैयारी बहुत ही कम समय में रंगमंडली टीम के सदस्यों द्वारा की गयी थी। यह गीत बुनकर की भावनाओं को दर्शा रहा था।

सुरोजीत जी :- इन्होने "राष्ट्रीय हथकरघा दिवस" क्यूँ और कब से मनाया जाता है जैसी महत्वपूर्ण बातों की जानकारी दी। इन्होने स्वदेशी अपनाओ आन्दोलन 1905 से लेकर वर्ष 2015 में पहली बार "राष्ट्रीय हथकरघा दिवस" मानने वाले सफ़र के बारे में बताया। इन्होंने रोजगार सम्बंधित संभावनाओं को भी बताया साथ ही साथ हथकरघा द्वारा निर्मित वस्त्र को अपनाने की बात कही।

रंगमंडली :- टीम के द्वारा एक बुनकरों की प्रार्थना " मेरे लिए शुभ्र धवल वस्त्र बुनो" की प्रस्तुति की गई। इस प्रस्तुति के दौरान सभागार में उपस्थित सभी लोगों ने बुनकरों के सम्मान में खड़े होकर प्रार्थना को सुना। इस प्रार्थना में प्राचीन काल से लेकर अभी तक के बुनकरों से एक सुनहरे वस्त्र तैयार करने की बात थी। इस प्रार्थना के उपरांत इसमें कल्पना की गई कि वस्त्रों का निर्माण प्राचीन काल के बुनकर कैसे करते थे और उनकी तुलना में अभी कितना कुछ करना बाकी है। बुनकरी एक ऐसा विषय है कि इस विषय में जितना भी हम समय दें कम ही पड़ता है।

प्रार्थना के उपरांत टीम ने कबीर द्वारा लिखित बुनकरों के लिए गीत "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" की प्रस्तुति दी। यह गीत हरबार की तरह इस बार भी अत्यंत प्रभावी रहा ।

शुरूआती दौर में रस्सी और लकड़ी के इस्तेमाल से कपड़े तैयार किये जाते थे और इस लूम की चौड़ाई काफी कम होती थी। यह लूम बैक स्क्रेब लूम के नाम से जाना जाता है, इसको बुनकर अपने कमर में बांधकर और एक छोर घर के किसी खिड़की या दरवाजे में फंसाकर बुनाई करते थे और यही से लूम को विकसित किया गया। धेरे-धीरे आधुनिक समय में इस्तेमाल किये जाने वाले अधिक गति वाले लूम का आविष्कार हुआ ।

इस बार 4 लकड़ी के इस्तेमाल से 4 वार्प , मास्टर बुनकर के द्वारा तैयार किया गया। बुनाई इकाई के बेकार धागों से यह वार्प तैयार किया गया। उपस्थित महिलाओं में सामजिक दूरी को देखते हुये 8 की संख्या में मंच पर आमंत्रित किया गया। सबसे पहले उनको इस वार्प के बारे में अवगत करवाया गया फिर अब तक के सीखे गए कौशल का इस्तेमाल करके उनको कपड़े का प्रारूप देने को कहा गया। मास्टर बुनकरों ने उन्हें वेफ्ट के लिए धागे दिए। सभी 8 महिलाओं ने बुनाई करने की कोशिश की और चार तरह के कपड़े तैयार किये। इसके बाद उनको इस लूम पर बुनाई करने के अनुभव को जानने की कोशिश की गई,- भारती देवी जी (बुनकर) का कहना था कि इकाई में जो हम लूम चलाते हैं उसपर कपड़ा तैयार करना काफी आसान होता है, जबकि इसपर बुनाई करना काफी कठिन है। फिर उनको बताया गया कि बुनाई की शुरुआत कैसे हुई थी और हम इस क्रिया-कलाप का इस्तेमाल बुनकरी की कठिन परिस्थितियों से अवगत करवाने के लिए किये थे। इससे उनकी एक समझ विकसित हुई कि आज की बुनकरी पहले की अपेक्षा काफी आसान हो गई है।



sabrangi
रंगीन BIHAR

सबरंगी एवं ज़ीरो वेस्ट यूनिट

महिलाओं को रोजगार देने के उद्देश्य से आजीविका के तहत सबरंगी की शुरुआत सन 2017 में हुई।





पहल एवं प्रयास

महिलाओं को एक स्वस्थ और सुरक्षित माहौल में काम देना ही सबरंगी का शुरुआती उद्देश्य था। ग्रामीण छेत्र में हथकरघा को बढ़ावा देने से स्वदेशी उद्योग को बढ़ावा मिलता है ।सबरंगी महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाने में मदद करता है।

गाँधी जी के विचारों को जीवित रखने के लिए और स्वदेशी को आगे बढ़ने के उद्देश्य से सबरंगी की आगे बढ़ा। पर्यावरण के अनुकूल और नैतिक रूप से उत्पादित कपड़ों की तलाश करने वालों के लिए सबरंगी में बुने कपड़े एक आकर्षक विकल्प हैं। यह भारत की संस्कृति को भी पोषित करने वाली इकाई है।

शुरुआत में सबरंगी में थान के कपड़े बनाये जाते थे। सभी बुनकरों को बुनाई के बारे में बताया जाता था और सिखाया जाता था। आज सभी बुनकर कुरता, पायजामा, साड़ी, दुपट्टा, गमछा, टावेल का आत्मविश्वास से उत्पादन करते हैं।

चुनौतियाँ

- हथकरघा के लिए कुशल कारीगरों की कमी चुनौती रही है ।
- पुरानी पीढ़ी में कारीगरों का हथकरघा के प्रति लगाव था जबकि नयी पीढ़ी को हथकरघा में बहुत कम रूचि है।
- समय के साथ- साथ कुशल कारीगरों का मिलना बहुत मुश्किल हो गया है।
- ग्रामीण छेत्र में महिलायों को इन सभी से जोड़ना और बारीकियों को सिखाना बहुत कठिन रहा है वे पारंपरिक रूप से से संकोची रही हैं और नई तकनीक सीखने में लज्जा महसूस करती हैं।

बदलाव





प्रारंभ में नए बुनकरों को जोड़ना उनको हथकरघा के बारे में बताना और उनको सिखाना था जबकि आज जुड़ी हुयी महिलायेँ और किशोरियाँ हथकरघा को देखते ही इससे उत्पादित कपड़ो में रूचि दिखलाते हैं। शुरुआत में बुनकर थान के कपड़े बुनते थे और आज सभी बुनकर नए नए डिजाईन भी आसानी से बना लेते हैं ।प्रारंभ की तुलना में आज बुनकरों ने काफी अनुभव प्राप्त कर लिया है। उनके लिए अब हथकरघा को चलाना सहज और उत्साहपूर्ण हो गया है।

उत्पादन

कुरता	3024
पायजामा	1700
साड़ी	448
दुपट्टा	333
गमछा	40
टावेल	31













शिल्पकारी

आजीविका इकाई की इस उप इकाई का उद्देश्य स्थानीय शिल्पकारी की तकनीक और कला को प्रोत्साहित कर विश्व बाज़ार एवं कला प्रशंसकों तक पहुंचाना है।












आज यहाँ के बने सेरामिक के उत्पादों की हर जगह माँग हो रही है।

दुर्गाजी, दिग्विजय सिंह, गौरव मोर्या - आजीविका संचालक

टीम का संदेश

कला प्रशिक्षक बनने का सफरनामा

कला का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। कला बच्चों का मनोरंजन तो करती ही है इसके साथ ही साथ यह बच्चों के रचनात्मक कौशल को बढ़ाने में भी काफी सहायक है। समाज में आज भी कला विषय को सहजता से स्वीकार नहीं किया जाता। इसे बस समय की बर्बादी समझा जाता है। समाज की ऐसी सोच को परिवर्तित करने के लिए बिहार के सिवान जिला के नरेन्द्रपुर गाँव में स्थापित परिवर्तन संस्था काम कर रही है। इसके अंतर्गत 6 अलग -अलग कार्यक्रम "शिक्षा, सामुदायिक खेल, सामुदायिक रंगमंच, हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र, जागृति महिला समाख्या और आजीविका" चल रहे हैं। शिक्षा इकाई की उप इकाई "घरौंदा" एक कला संकाय है जो बच्चों के अन्दर कला के अलग-अलग माध्यमों से रचनात्मक विकास के लिए प्रेरित करता है।



मुझे कला में रूचि बचपन से ही थी। पर घर का माहौल ऐसा नहीं था जिससे मैं कला में कुछ कर दिखाऊँ या अपना कैरियर इस क्षेत्र में तलाश सकूँ। पिता जी से प्रोत्साहन मिलता था पर जब कैरियर की बात होती तो फिर मेरा चित्रकला कर पाना एक बहुत बड़ी चुनौती बन जाती। घर से छुपकर ही मैं



प्रायः चित्र बनाता था। एक बार अपनी चित्रकला को लेकर मैंने घर में बिना बताये जिला स्तरीय कला प्रतयोगिता में भाग लिया और मेरा चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ। इस बात की ख़बर जब अखबारों में आई और मुझे जिला पदाधिकारी के हाथ से पुरस्कार मिला तब हमारे घरवालों की सोच बदली और मैं कला महाविद्यालय में दाखिला ले पाया।

सन 2015 में कला एवं शिल्प महाविद्यालय, पटना से स्नातक करने के बाद मेरा बहुत मन करता था कि मैं छोटे बच्चों से जुड़ूँ। उनके लिए कला शिक्षा उपलब्ध कराऊँ ताकि जो संघर्ष मैंने किया है वो कला में रूचि रखने वाले बच्चों को न करना पड़े। मैं पटना में ही "प्रेमचंद रंगशाला" में स्लम क्षेत्र के बच्चों के साथ कला सत्र का संचालन करने लगा। धीरे धीरे मुझे बच्चों के साथ काम करना बहुत अच्छा लगने लगा, खास कर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के साथ।

इसके लिए लेकिन मुझे सामाजिक स्तर पर कार्य कर रही संस्था की जरुरत थी। सन 2018 के फरवरी माह में परिवर्तन द्वारा आयोजित "मधुबनी पेंटिंग कार्यशाला" में बतौर विशेषज्ञ के रूप में पहली बार मेरा परिवर्तन आना हुआ। मैं पहली बार इस तरह के कार्य से जुड़ पाया था। यहाँ आकार मुझे लगा मैं जिस तरह के माहौल की तलाश में हूँ वह मुझे यहीं मिल सकता है। फिर मैं 25 जुलाई 2018 से परिवर्तन में बतौर घरौंदा कला प्रशिक्षक नियुक्त हुआ। आज मैं बीते 7 सालों से परिवर्तन कला संकाय से जुड़ा हूँ और कार्यक्षेत्र के 21 गाँव ों के बच्चों में कला के प्रति रूचि विस्तार करने का प्रयास कर रहा हूँ। यहाँ के विद्यालयों में कला का कोई सत्र संचालित नहीं होता और ना ही कला शिक्षक की कोई व्यवस्था है। इस परिस्थिति में 21 विद्यालयों के साथ जुड़कर कला सत्र का आयोजन कर रहा हूँ। बच्चों को कला प्रतियोगिताओं के लिए प्रेरित करता हूँ। कला समय की बर्बादी नहीं अपितु रचनात्मकता का मार्ग है यह समाज तक पहुंचाने में प्रयासरत हूँ। इसके साथ ही साथ परिवर्तन की अन्य शाखा से भी जुड़कर कला का अवसर तलाशता हूँ।

शुरूआती दौर में यह कार्य मेरे लिए थोड़ा चुनौतीपूर्ण था क्योंकि ग्रामीण स्तर पर कार्य करने का सपना देखना और हकीकत में करना दोनों में काफी फर्क होता है। पर यहाँ के सहकर्मीयों के सहयोग एवं संस्थापक श्री संजीव कुमार जी और सेतिका जी तथा राजेश्वर मिश्रा जी के साथ समय समय पर मिले मार्ग-दर्शन से यह चुनौती भी आसान होती चली गयी। इस संस्था से जुड़ने की सबसे खास बात यह है कि यह संस्था अपने कामों के साथ खुद भी क्षमता विकास के कई अवसर हमें प्रदान करती है। इस संस्था की तरफ से मुझे "जवाहरलाल नेहरु विश्व विद्यालय (JNU)" स्पिक मैके कार्यक्रम में जाने का मौका मिला। जहाँ हमने ओड़िसा के पटचित्र" बनाने की तकनीक को समझा। इसके साथ ही साथ समय समय पर देश की कला के क्षेत्र में काम करने वाले अनेक प्रसिद्ध कलाकार एवं लोक कलाकार से भी बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। इन सात सालों में कैमलिन, मिलिपैड, नेशनल गैलरी ऑफ़ मोर्डन आर्ट जैसी संस्थाओं एवं देश के प्रसिद्ध इलेस्ट्रेटर प्रोईती रॉय, भार्गव कुलकर्णी, वर्सारली जोशी, ऐलन शॉ एवं मुश्ताक अहमद जी जैसे कलागुरु के साथ हमने काम किया। बच्चों के साथ किशोरी बच्चियों समुदाय और अभिभावकों के साथ भी हमारा व्यवहार और रिश्ता कैसे मजबूत हो यह कौशल भी हम सीख पाए।

इस संस्था से जुड़कर बच्चों के साथ काम करने का मेरा सपना पूरा हुआ और इसके साथ ही साथ मुझे खुद को समझने और विकसित करने का भरपूर अवसर भी मिला। जहाँ मेरे घर वाले कला से मुझे दूर करते थे आज वे ही घर वाले मुझपर गर्व महसूस करते है।

राजवर्धन, संचालक, कला

परिवर्तन प्रकाशन

चहकने की ललक : यह बच्चों का एक अख़बार है जो शिक्षा इकाई द्वारा प्रत्येक **4** माह पर प्रकाशित किया जाता है। इस अख़बार के निर्माण के लिए बच्चों के साथ तीन माह में तीन कार्यशालाएं आयोजित होती हैं एवं उन कार्यशालाओं में बच्चों द्वारा बनायी गई कलाकृतियाँ, लेख, अपनी बात एवं अन्य लिखित चित्रित सामग्रियों को चुनकर एक वाल अख़बार का स्वरुप दिया जाता है। बाद में उसी वाल अख़बार से दो पन्ने का अख़बार तैयार कर बच्चों एवं उनके अभिभावकों व शिक्षकों तक पहुँचाया जाता है ताकि बच्चों के अन्दर लिखने, एवं चित्रकारी करने के शौक को आगे बढ़ाया जा सके।

इस अख़बार का पहला अंक वर्ष **2014** में प्रकाशित किया गया एवम अभी तक **28** अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

हमार अंगना : यह पत्रिका शिक्षा इकाई की उप इकाई बालघर आँगन द्वारा प्रत्येक **6** माह पर प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका में बालघर आँगन द्वारा पिछले **6** माह में बच्चों एवं सेविकाओं व सहायिकाओं के साथ किये गए विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रम और बच्चों एवं सेविकाओं की कहानियां होती है।

इस अख़बार का पहला अंक वर्ष **2014** में प्रकाशित किया गया एवं अभी तक **17** अंक प्रकाशित हो चुके है।

कृषि सन्देश : यह पत्रिका हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका है। इस पत्रिका में मुख्य रूप से सीजन के हिसाब से किसानों के साथ विभिन्न कार्यशालाएँ, कार्यक्रम एवम अन्य खेती से सम्बंधित बातों को शामिल किया जाता है साथ ही साथ खेती के क्षेत्र में अच्छा करने वाले किसानों द्वारा अपनी बातें एवं बदलाव की कहानियां बताई जाती हैं।

इस पत्रिका का पहला अंक वर्ष **2015** में प्रकाशित किया गया था एवं अभी तक **22** अंक प्रकाशित हो चुके है।

परिवर्तन पत्रिका : यह परिवर्तन की एक मात्र ई पत्रिका है जो प्रत्येक माह प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका में मुख्य रूप से हर माह की प्रमुख गतिविधियों को शामिल किया जाता है साथ ही साथ अगले माह के प्रमुख कार्यक्रमों की जानकारी भी दी जाती है।

इस पत्रिका का पहला अंक वर्ष **2017** में प्रकाशित किया गया। अभी तक **9** खंडों में 98 पत्रिकाओं का प्रकाशन हो चुका है।



परिवर्तन ने दिए सफलता के आयाम



रोजादीन, पिता श्री कयामुद्दीन, ग्राम-मियां के भटकन के रहने वाले हैं। इनकी उम्र 23 वर्ष है। सामुदायिक रंगमंच में प्रारंभिक दौर से ही जुड़े है। प्रारंभिक दौर में रोजादीन हल्का-फुल्का ढोलक बजाते थे, लेकिन उनके इस वादन से सामुदायिक रंगमंच का काम बेहतर ढंग से नहीं हो पाता था। सामुदायिक रंगमंच लेकिन सिर्फ बेहतर और उम्दा कलाकार नहीं खोजता बल्कि उस व्यक्ति में सीखने की ललक हो और सामाज के प्रति बेहतर सोच रखता हो उसे ऐसे लोग भी चाहिए होते हैं। जब भी कोई नाटक की शुरुआत हुई रोजादीन कहते थे मुझे नाटक में रोल नहीं करना है, लेकिन वे कारणनहीं बताते थे कि क्यूँ नहीं करेंगे। कुछ दिनों बाद जब उनके मन में इछा हुई कि मुझे भी नाटक करना चाहिए, क्यूंकि सभी नाटक करते थे और उनकी तारीफ़ भी होती थी। तब रोजादिन ने बताया की "मुझे पढने नहीं आता इसलिए मैं नाटक से भागता था, लेकिन अब मुझे पढ़ाईए मुझे पढना है "। धीरे-धीरे रोजादीन पढ़ने लगे और नाटकों में भूमिका भी निभाने लगे। इतना ही नहीं कई संगीत प्रशिक्षक आये और रोजादीन अथक मेहनत से अच्छे ढोलक वादक भी बन गए। धीरे-धीरे यह पता चला कि रोजादीन एक बेहतर गायक भी हो सकते हैं तो रोजादीन हारमोनियम से अभ्यास भी करने लगे।

आज रोजादीन की सामुदायिक रंगमंच के मुख्य गायकों में इनकी गिनती होती है। बहुत कम ही ऐसे लोग होते हैं जिनका इतने कम दिनों में इतना विकास देखा गया हो। आज रोजादीन प्रयाग संगीत समिति के माध्यम तबला वादन के दुसरे वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इनकी इच्छा म्यूजिक कंपोजर बनने की है।



मुकेश सिंह, ग्राम नरेन्द्रपुर जीरादेई जिला सिवान बिहार के निवासी हैं। ये किसान हैं। अकेले खेती करते थे और बहुत परिश्रम के बाद भी लाभ नहीं मिलता था। परेशान होने पर परिवर्तन संस्था के कृषि विशेषज्ञों से मिले और कृषि गतिविधियों , बैठकों में शामिल होकर परम्परागत विधि से हट कर नवीन खेती पद्धति के साथ खेती करने की सलाह पर समय पर बुआई, सही प्रजाति का चयन, फसल बुआई सुपर सीडर से करने लगे। जिसे उत्पदान में बढोतरी हुई और लागत में कमी भी आई।

परिवर्तन संस्था के कृषि विशेषज्ञ के तकनिकी सहयोग से घर के बगल जैविक रूप से पोषक वाटिका का निर्माण भी किया। जिससे इन्हें वर्ष भर हरी ताज़ी सब्जियां प्राप्त हो जाती है। मुझे अब बाजार से सब्जी भी नहीं खरीदनी पड़ती है। आज बढ़े उत्पादन से घर का वर्ष भर खाने के अनाज के बाद बिक्री भी कर लेते हैं। जिससे पढ़ रहे बच्चों की फीस आसानी से भर जाती है। बढ़ी आमदनी से ये पशुपालन भी करने लगे है। इनकी खेती को देख कर आसपास के किसानों में भी वैज्ञानिक खेती करने का उत्साह बढ़ गया है और वे भी वैज्ञानिक तरीकों से खेती करना चाहते हैं ।



अरुण सिंह, एक युवा किसान: बिहार के सिवान जिले के जीरादेई प्रखंड में रुइया गाँव, छोटे और सीमांत किसान का 250 घरो वाले गाँव में बसा हुआ है। इसी गाँव से श्री अरुण सिंह शुरुआती दिनों में अपनी आमदनी को पूरा करने के लिए विदेश में नौकरियां करने गए। लेकिन करोना काल के दौरान मन में हुए बदलाव के कारण गाँव की तरफ रुख किया। गाँव आने पर खाली रहने के बजाय घर की 02 एकड़ पुश्तैनी जमीन पर खेती करने लगे। अरुण बतलाते हैं कि शुरुआत में जानकारी के आभाव के कारण पर्याप्त उत्पादन नहीं मिलता था।

एक दिन इनके गाँव में परिवर्तन संस्था द्वारा किसान चौपाल बैठक का आयोजन किया गाया था जिसमेये शामिल हुए। और प्रभावित हुए। इसके बाद परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से जुड़कर लाभार्थी किसान बन गए। वह लगातार परिवर्तन संस्था में आयोजित कृषि गतिविधियों, गोष्ठी, वैज्ञानिक संगोष्ठी, प्रशिक्षण में भाग लेते रहे। इसके बाद उन्होंने न केवल उन्नत फसल पद्दतियों को अपनाया , बल्कि छोटे और सीमांत किसानों को अपने खेत में नई पद्धति को अपनाने के लिए प्रेरित भी किया।

इस प्रकार बहुयामी रणनीति के तहत उन्होंने, धान गेंहू के आलावा चना, मसूर , अरहर सरसों, प्याज और मडुआ की खेती करना शुरू किया , कम अवधि में तैयार होने वाली धान की प्रजाति को अपनाया , गेहूँ की पुरानी प्रजातियों को छोड़ कर नई प्रजाति कर्ण वन्दना DBW187 गेहूँ की खेती करने लगे , गेहूँ फसल की अगेती बुआई करके गेहूँ की फसल की परिपक्वता के समय गर्मी के दबाव को कम करने का लाभ मिला और धान गेहूँ की फसल चक्र में तीसरी फसल के रूप में दलहनी फसल मसूर ,चना , अरहर और मोटे अनाज लेने लगे हैं। अरुण बतलाते हैं कि परिवर्तन के सहयोग से उन्हें एक ही खेती में कुल 03 फसल एक वर्ष में बोने और काटने का लाभ मिला। आज इनके सहयोग से इनके गांव में 30–35 किसान मोटे अनाज मडुवा और दलहनी फसलों की खेती करने लगे हैं साथ ही अपने इसे बने व्यंजनों को अपने भोजन में भी शामिल करने लगे हैं।

अरुण बतलाते है की परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से निरंतर प्राप्त तकनिकी जानकारी के सहयोग से अधिक उत्पादन से उनकी आमदनी में वृधि हुई हैं। अरुण सिंह एक युवा किसान के नाते खेती में और विस्तार कर लीज पर भी जमीन लेकर खेती करने लगे हैं साथ ही आधुनिक कृषि यंत्र की खरीद कर गाँव के किसानो की मदद भी करते हैं|

डोमा राम,ग्राम-धरमपुर से आते हैं। 1981 से ग्राम-बंगरा निवासी श्री बालेश्वर पाण्डेय से हारमोनियम वादन सीखते थे। 198 7में डोमा राम को नाच पार्टी के सागर नाम के व्यक्ति ने अपने नाच में हारमोनियम बजाने को कहा और यह भी कहा की आपको कुछ पैसे भी मिलेंगे।डोमा राम बेरोजगार थे इसलिए नाच पार्टी से जुड़ गए और नाच के हजारों प्रदर्शनों और नाटकों में इन्होने संगीत देने का काम किया। लगभग तीस सालों तक डोमा राम नाच पार्टी के साथ रहे ।2014 में डोमा राम सामुदायिक मंच से जुड़े तब इनकी उम्र 62 साल की थी। सामुदायिक रंगमंच जुड़ने के बाद जब आधुनिक संगीत और नाटक से इनका परिचय हुआ तो इन्हें थोड़ी दिक्कतें आयीं,लेकिन डोमा राम कई नाटकों और प्रदर्शनों में भाग ले चुके थे इसलिए मंच का भय नहीं था,लोक नाटकों में परदे के पीछे से संवाद बोलने की भी परम्परा रही है,इसलिए डोमा राम सामुदायिक रंग मंच के प्रदर्शनों में काफी सचेत और एक्टिव रहते थे क्यूंकि इस रंग मंच में परदे के पीछे से संवाद बोलने की परम्परा नहीं थी। इनका कहना है कि, आधुनिक रंगमंच और लोक रंगमंच दोनों ही महत्वपूर्ण हैं और अपने तरीके से समाज और संस्कृति को प्रभावित करते हैं। आज डोमा राम 72 साल के हैं लेकिन इनकी उर्जा और जोश बिलकुल युवा की तरह है,न सिर्फ लोक नाटक बल्कि बेक स्टेज की भी इनकी जानकारी बढ़ी है और इनका कहना है कि जबतक जियेंगे सामुदायिक रंग मंच का साथ नहीं छोड़ेंगे और रंगमंच करते रहेंगे ।





चुनचुन कुमारी का जन्म दिनांक: - 24 अक्टूबर 2003 के दिन,गांव बलईपुर पंचायत भरौली,पोस्ट मैंस खाल ,थाना आन्दर,जिला सिवान (बिहार में हुआ है। पिताजी का नाम लक्ष्मण प्रसाद और माता जी का नाम उर्मिला देवी है। इनके पिताजी किराना की दुकान चलाते हैं और माँ घर पर रहती हैं । इनकी शुरुआती पढ़ाई गांव के उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय बलईपुर से हुई ।

2016 से ये परिवर्तन की खेल इकाई से जुड़ीं और एक कुशल फुटबॉलर बन गईं ।बीच में इनके खेलने को लेकर इनके पिता ने आपत्ति की तो खेलना रुक गया । फिर परिवर्तन खेल इकाई के संचालक मिथिलेश जी और कोच तरुण कुमार,रिंकू कुमारी एवं प्रियंका कुमारी के समझाने पर इन्होंने दोबारा नियमित अभ्यास शुरू किया और तीन राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं , अंबाला, मध्य प्रदेश और रोहतास में भाग लिया और प्रमाण पत्र पाया । आज वे बिहार सरकार के कृषि विभाग में नौकरी करने लगीं हैं और परिवर्तन को अपनी इस तरक़्क़ी के लिए बहुत धन्यवाद देती हैं ।

सदारून खातून चंदौली-गंगौली की रहने वाली एक साधारण महिला हैं | ये पहली बार 2019 में परिवर्तन द्वारा आयोजित सहायिका प्रशिक्षण 2019 में भाग लेने आईं | उस समय उसके पास एक छोटा बच्चा था | कार्यक्रम के समय सदारुन खातून अपने छोटे बच्चे को नीचे लेटाकर प्रशिक्षण में बताई गयी गतिविधियों को बहुत ध्यान से सीखती थीं | गतिविधि के समय जब बच्चा रोने लगता था तो तुरंत वहां से अपना बच्चा लेकर बाहर निकलती और उसे दूध पिलाकर फिर उसे नीचे लेटा देती और अपने काम में लग जातीं। पहली बार के प्रशिक्षण में उन्होंने एक कहानी का पपेट (कठपुतली) बनाई जिसका नाम था प्यासा-कौवा | सदारुन खातून ने अपनी कहानी के बारे में जितने अच्छे से बताया उससे भी अच्छा पपेट उन्होंने बनाया।

सदारुन आज और भी अच्छे पपेट बनाती हैं। बच्चों के साथ उनका व्यवहार बहुत ही आत्मीय है | वह समय से अपना केंद्र खोलकर अपने कार्यक्रमों में लग जाती हैं | परिवर्तन सहायिका प्रशिक्षण से यह और समृद्ध हुई हैं और कुशलता से अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करती हैं |



ज्योति कुमारी की उम्र 5 वर्ष है। वह ग्राम नारायणपुर की निवासी है। ज्योति के दो बहन एक भाई है | उसके पापा छोटे ठेकेदार हैं जो घर बनाने का काम करते हैं और माँ घर पर के काम करती हैं। यह कहानी उस समय की है जब परिवर्तन परिसर में बालघर की नयी इकाई खुली थी | ज्योति एक वर्ष तक बालघर से जुड़ी रही। ज्योति का स्वभाव अपने सहपाठियों से अलग था। ज्योति में एक अलग प्रकार की उर्जा दीखती थी जो बहुत सराहनीय थी | ज्योति ने जब बालघर आना शुरू किया तो चौथे-पांचवें दिन से ही बालगीत की गतिविधि करने लगी। कविता,कहानी,प्रार्थना,सब सुनने लगी | ज्योति की स्मरण शक्ति बहुत ज्यादा थी, दो-तीन बार जिस कविता कहानी को पढ़ लेती थी वह याद कर लेती थी | उसके अन्दर क्लास में लीडरशीप की भावना दिखती थी | देखते-देखते एक वर्ष बीत गया। बालघर की अवधी समाप्त हुई |

आंगनबाड़ी सेंटर पर जाने के बाद ज्योति का दाखिला आदर्श पब्लिक स्कूल नरेन्द्रपुर ग्राम में हुआ | आदर्श पब्लिक स्कूल में पढ़ते भी ज्योति परिवर्तन से जुड़ी रही | वह परिवर्तन में पेंटिंग और विज्ञानशाला से जुड़ी। वर्तमान में ज्योति 12वीं की छात्रा है और अपने सपनों को आत्मविश्वास से पूरा करने में लगी हुई है|



इमरान हुसैन की कहानी : विज्ञानशाला का प्रयास रहा है कि जुड़े हुए बच्चों में विज्ञान के सैद्धांतिक पहलुओं पर एक अलग प्रकार का सोच रखने की बुद्धिमता हासिल हो जिसके द्वारा वह सभी विन्दुओं के वैज्ञानिक पहलुओं पर विचार करें तथा वैज्ञानिक सोच के साथ तथ्यात्मक एवं अनुभव आधारित समझ के साथ सामंजस्य परिणाम तक पहुच बनाने की हुनर विकसित कर पायें।



बेबी बंगरा गाँव की रहने वाली एक साधारण परिवार की लड़की है | इसकी उम्र 16 साल है। बेबी को चित्र बनाना पसंद है। साथ ही उसे स्वेटर बुनना, सिलाई करना, नए नए क्राफ्ट सीखना, नाचना, गाना, पसंद है | इतना ही नहीं खेतीबाड़ी के समय बेबी को अपने भाई के साथ खेतों में जाकर खेती करना भी बहुत पसंद है | जिसमें वह धान या गेहूं बोने से लेकर काटना, बोझा बनाना एवं घर तक लाने का सारा काम करती है और एक जिम्मेदार किसान के तरह जीती भी है |

बेबी से घरौंदा इकाई के राजवर्धन जी की पहली मुलाकात महिला समाख्या की रजिया जी की सहायता से हुई, जब वे किशोरी क्लास के लिए बंगरा गाँव में सत्र प्रारंभ करने वाले थे। 10 किशोरियों के साथ किशोरी सप्ताहिक सत्र का संचालन शुरू किया गया | आज बेबी के हाथ से बनी चादर पेंटिंग में रंगों का समायोजन और बारीकी दिखती है | अब वह अपने रिश्तेदारों के लिए और सिवान के बाजार के लिए पेंटिंग करती है। एक रिश्तेदार द्वारा उसकी बनाई चादर दिल्ली ले जाने पर, चादर की माँग दिल्ली से आयी है। अब वह आत्मनिर्भर हो रही है और परिवर्तन से जुड़ने की यात्रा को अपनी सफलता की यात्रा के रूप में देखती है।



धनजी कुमार : धनजी बहुत ही तेज दिमाग और कुछ भी सिखने को लेकर इच्छुक बच्चा है। उसकी उम्र 11 साल क है | उसका घर मियाँ के भटकन में है और यह पांचवी कक्षा का छात्र है |

धनजी का पुस्तकालय से जुड़ाव धीरे-धीरे स्कूल सत्र से शुरू हुआ। वह सभी गतिविधियों में भाग लेता | फिर धीरे-धीरे कुछ दिनों के बाद वह किताबों के साथ जुड़ने लगा और किताबों को लाइब्रेरी कार्ड बनाकर घर ले जाने लगा | उससे बातचीत करने और उसकी पसंद की किताबों को ध्यान से देखने पर पता चला कि धनजी को समस्या और समाधान की किताबों को पढ़ने में मजा आता है |

सत्र के दौरान धनजी बच्चों को अभिनय के साथ कविता या कोई कहानी सुनाता है और बाकि बच्चे जिन्हें किताबें पढ़ने नही आतीं उनके साथ बैठ कर पढ़ता भी है। जिससे वे बच्चे भी कहानी को जान सकें और क्राफ्ट से जुड़ी गतिविधि सीख सकें। स्कूल में प्रार्थना के दौरान वह लाइब्रेरी से पढ़ी,सीखी कविताये, कहानियों को सुनाता है ।

अब धनजी को पुस्तकालय से जुड़े एक वर्ष हो गया है। वह 12-16 उम्र समूह की किताबों को पढ़ता है और घर ले जाता है। अब जो किताबें वह घर ले जाता है उनको उसकी दादी और बुआ भी पढ़ती हैं।

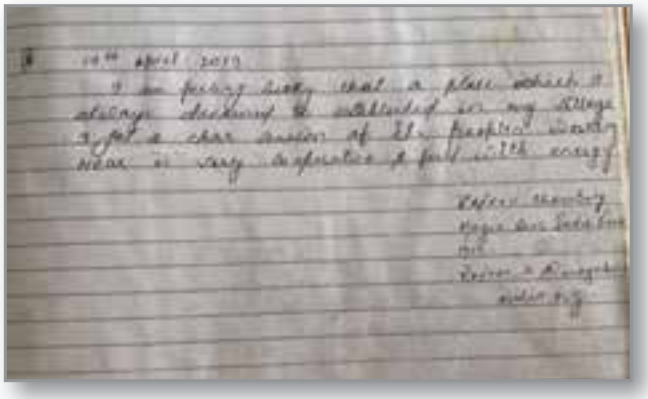
नरेन्द्रपुर की सुनीता देवी और भवराज पुर की रेखा देवी की कहानी या जीवन संघर्ष में भी आश्चर्यजनक साम्यता दिखाई पड़ती है।बेल्ही की सुनीता देवी और सलाहपुर की नैन पति देवी कहानी काफी मार्मिक भी है और प्रेरणा दायक भी।बडहुलिया की हूजिया और खरगी रामपुर की निर्जला देवी या भवराज के एक टोले की रहने वाली सुख रजिया देवी आज एक सजग और कर्मठ महिला के रूप में अपने -अपने गाँव /टोले में जानी जाती हैं। वह अब अपने संघर्ष को और विस्तार दे चुकी हैं और समुदाय की उन जैसी महिलाओं के लिए अपने को उपलब्ध रखती है जिसे आज किसी सहारे या संबल की जरूरत है।

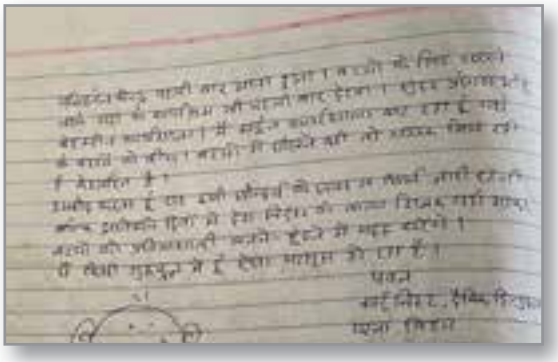




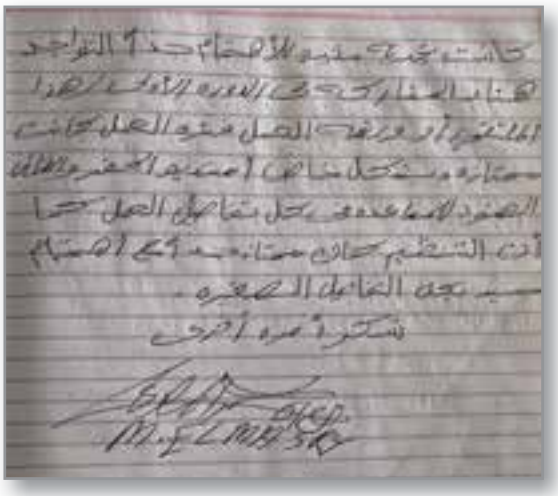
लक्ष्मीना देवी अनुसूचित जाति में कभी अस्पृश्य माने जाने वाली डोम विरादरी से ताल्लुक रखती हैं।मेट्रिक तक पढ़ी हैं वह भी आज से करीब अड़तीस वर्ष पहले, रूपये के अभाव में एक भी सरकारी नौकरी हासिल नही कर सकी।परंपरागत रूप से बांस के बर्तन बनाने का काम करती हैं।वह आज इस बात से काफी अधिक चिंतित दिखाई पड़ती हैं की अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्लास्टिक से बने घरेलू उपयोग में आने वाले बर्तनों जैसे सूप, दौरी, कोनिया आदि की मांग बढ़ रही है और बांस से बने बर्तनों की मांग काफी घट रही है। लेकिन वह शिक्षा के महत्व को जानती है और पूरे समुदाय के बच्चों विशेषकर लड़कियों को अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए कहती है, उन्हें पढ़ाती हैं।

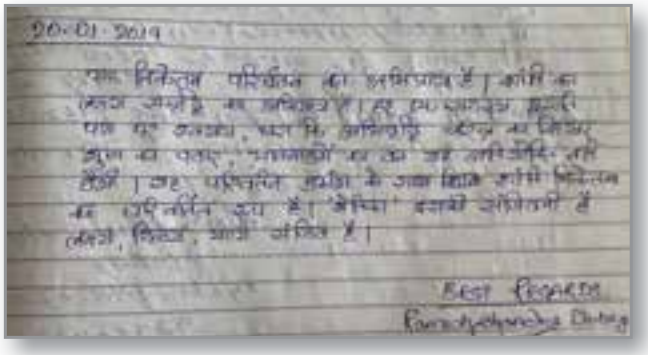
अतिथियों के नोट्स

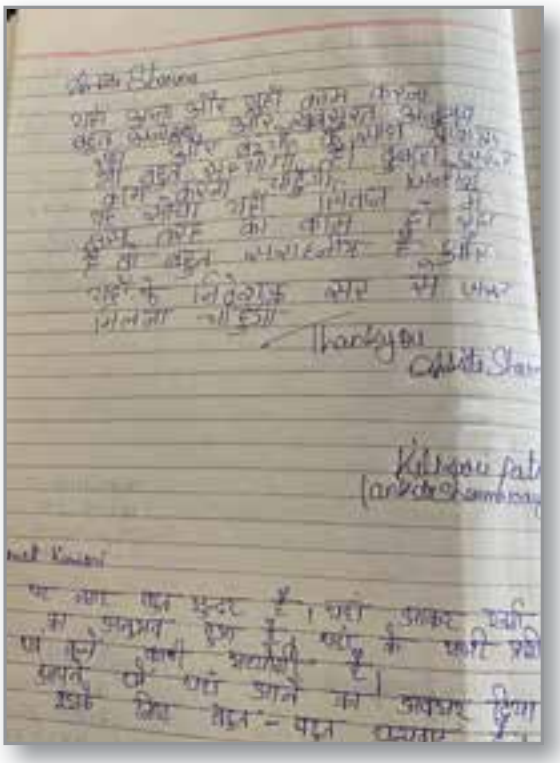














परिवर्तन के अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम

परिवर्तन के कुछ अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम जिसे हमलोग प्रतिवर्ष करते रहे हैं

विश्व साक्षरता दिवस : इस दिवस के अवसर पर परिवर्तन टीम अलग अलग समूह में बंटकर कार्यक्षेत्र के प्रत्येक विद्यालय एवं गाँव में जाकर बच्चों के साथ कहानी पाठ सत्र का आयोजन करती रही हैं। कहानी पाठ के बाद बच्चों के साथ उस कहानी में छुपे सन्देश आदि पर चर्चा करती हैं। कहानी से जुड़े विषय पर विभिन्न तरह की गतिविधियों का आयोजन करती हैं। इस कार्यक्रम का आयोजन वर्ष 2017 से लगातार किया जा रहा है।



गणतंत्र दिवस : यह कार्यक्रम परिवर्तन के स्थापना काल से मनाया जा रहा है।



गाँधी जयंती : गाँधी जी के विचारों को जन जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष इस कार्यक्रम का आयोजन होता है जिसमे किसी गाँव या विद्यालय में जाकर कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम का आयोजन वर्ष 2013 से लगातार किया जा रहा है।

गाँव से जुड़ाव कार्यक्रम : इस कार्यक्रम के तहत दिल्ली पब्लिक स्कुल पटना में पढ़ने वाले कक्षा 11 वीं के छात्र परिवर्तन आते हैं एवम परिवर्तन द्वारा समुदाय के लिए चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों को देखते हैं। यहाँ के ग्रामीण लोगों के जीवन को भी करीब से देखते हैं। ये कार्यक्रम विशेषरूप से इस लिए आयोजित होता है ताकि शहर के बच्चे ग्रामीण जीवन का वास्तविक अवलोकन कर सके। इस कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2015 में हुई। तबसे इसे निरंतर किया जा रहा है।





बालसंसद : विद्यालय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों एवं विद्यालय कि वयवस्था में सुधार एवं सहयोग हेतु बालसंसद का गठन किया जाता है। इस कार्यक्रम से जुड़े बच्चों में अपनी नियमित पढ़ाई के साथ-साथ अपने नेतृत्व कौशल का भी विकास किया जाता है। यही बच्चे भविष्य में अपने विद्यालय एवं समाज के लिए एक बड़े बदलाव के रूप में आगे आते हैं। इस संसद का विधिवत चयन एवं संचालन वर्ष 2019 से नियमित परिवर्तन की देख रेख में किया जा रहा है।



सामुदायिक प्रदर्शनी : प्रत्येक महीने के अंतिम गुरूवार को परिवर्तन कि पूरी टीम कार्यक्षेत्र के किसी एक गाँव में जाती है एवं परिवर्तन द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में लोगो को बताती है। ताकि जो





लोग अपनी निजी समस्या के कारण परिवर्तन नही पहुँच पाये हैं, वे कार्यक्रम को समझ सके एवं परिवर्तन से जुड़ सके। इस कार्यक्रम का आयोजन परिवर्तन के स्थापना काल से ही किया जा रहा है ।

मीना मंच : किशोरियों के लिए यह मंच विद्यालय में बनाया गया हैं। जहाँ किशोरियां स्वयं कि समस्या पर स्वयं की कदम उठाती है एवम उसके समाधान तक पहुंचती हैं। इस कार्यक्रम में परिवर्तन का सहयोग वर्ष 2024 से दिया जा रहा है।

ग्रीष्मकालीन शिविर : प्रत्येक वर्ष गर्मी की छुट्टी के समय बच्चों के लिए इस शिविर का आयोजन किया जाता है जिसमे कार्यक्षेत्र के 21 गाँवों के बच्चे आयोजित लगभग 15-20 अलग अलग प्रकार की गतिविधियों में भाग लेते हैं एवं लगातार 7 दिन इस शिविर का हिस्सा बनते हैं। इस शिविर के आयोजन की शुरुआत वर्ष 2018 में हुई।



स्पिक मैके : स्पिक मैके संस्था एवम परिवर्तन के साझे समन्वयन में इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसमें अलग अलग विधा के विशेषज्ञों को बुलाकर विद्यालय में प्रस्तुतियां दी जाती हैं। ताकि युवा पीढ़ी अपनी संगीत, नृत्य के सांस्कृतिक धरोहर से परिचित रहे।



कथा शिविर : इस शिविर के तहत देश के अलग अलग हिस्सों से प्रसिद्ध लेखक परिवर्तन आते हैं एवं यहाँ रहकर अलग अलग गाँवों में घूमकर विभिन्न तरह की कहानियों की रचना करते हैं। इस कार्यक्रम की शुरुआत 2017 से हुई। इसके तहत शामिल रचनाकारों की रचनाओं को किताब का आकार दिया जाता है।



पोषण जागरूकता कार्यक्रम : इस कार्यक्रम के तहत नियमित रूप से खान पान एवं शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्व आदि को लेकर लोगों को जागरूक किया जाता रहा है।



शिक्षक बैठक सह शिक्षक दिवस : परिवर्तन से जुड़े शिक्षकों के साथ इस कार्यक्रम का आयोजन होता है जिसमें परिवर्तन द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों के प्रति शिक्षकों का सुझाव लिया जाता है ताकि आगे बेहतर से बेहतर आवश्यक कार्यक्रम संचालित किये जा सकें।

स्वतंत्रता दिवस : यह कार्यक्रम परिवर्तन के स्थापना काल से लगातार चल रहा है।

मीडिया कवरेज



दैनिक भास्कर सीवान / गोपालगंज भास्कर 19-09-2024

नरेंद्रपुर में 21 को होगा कुश्ती का आयोजन

सीवान | पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रखंड क्षेत्र के नरेंद्रपुर में आगामी 21 सितंबर को कुश्ती का आयोजन किया जाएगा। उक्त जानकारी परिवर्तन द्वारा दी गई। परिवर्तन के आलोक सिंह ने बताया कि परिवर्तन द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में लोगों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।



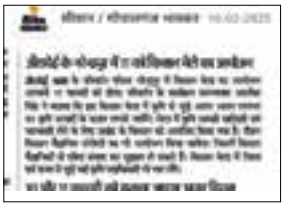
दैनिक भास्कर सीवान / गोपालगंज भास्कर 12-02-2025

नरेंद्रपुर में किसान मेले का आयोजन

जीतेई/जीतेई के नरेंद्रपुर स्थित परिवर्तन में मंगलवार को कृषि मेला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में किसानों की विभिन्न आवश्यकताओं जैसे उन्नत बीज की, खेती के उपकरण की, छोटे-बड़े यंत्रों की और देश दुनिया में अपनाये जा रहे खेती करने की नवीनतम पद्धति और कई प्रकार के हस्तिकों और मौसमी फसलों के पौधे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 75 से अधिक अधिक स्टाल लगाये गए। मेले में पहली बार किसानों को पर्यावरण अनुकूलन खेती की जानकारी दी गई।









बाल संसद कार्यशाला तीन स्कूल सम्मानित

जीतेई/दीक्षक को जीतेई के नरेंद्रपुर में बाल संसद चलाने प्रशस्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तीनों विद्यालयों के बाल संसद के सदस्यों ने अपने विद्यालय एवं कार्यों के लिए मिले गए चार्टों को लिखित रूप से प्रस्तुत किया एवं उनसे सभी विद्यालय के संसद के सदस्यों के सामने प्रस्तुत किया। प्रशस्ति के मूल्यांकन में अलग अलग विद्यालय के कुल 3 शिक्षक एवं 30 बच्चों शामिल थे। चार्ट प्रशस्ति उनसे बाल संसद के सदस्यों से सवाल जवाब का भी दौर चला। चर्चा के बाद उन्हें अपने घर पर खाने हुए अपने जिम्मेदारियों के निर्वहन एवं बाल संसद की प्रक्रियाओं को पैमाने हुए कुल तीन विद्यालय को सम्मानित भी किया गया। इसमें प्रथम स्थान राज विद्यालय बड़हरिया, द्वितीय स्थान राज विद्यालय नरेंद्रपुर एवं तृतीय स्थान राज विद्यालय बड़हरिया के बाल संसद को प्राप्त हुआ। संसद के सभी सदस्यों



सीवान 16-03-2022

जिलास्तरीय किसान मेले में एक किसान को किसान गौरव और 17 किसानों को मिला किसानश्री सम्मान



जगदेश एक्सप्रेस

www.janadeshexpress.in

नरेन्द्रपुर स्थित परिवर्तन द्वारा विज्ञान कांग्रेस का हुआ आयोजन



दैनिक भास्कर

21-Jan-2019

सीवान Page 1

पर्यावरण संरक्षण के लिए नरेंद्रपुर में युवाओं ने लगाई साइकिल रेस



सीवान / गोपालगंज भास्कर

जीतेई के परिवर्तन में विज्ञान कांग्रेस का किया गया आयोजन



दैनिक भास्कर

विद्यालय में बाल संसद कार्यशाला का आयोजन



संजीव कुमार
संस्थापक



सेतिका सिंह
कार्यकारी निदेशक

कार्यक्रम प्रबंधक



आलोक कुमार सिंह

प्रशासनिक कार्यकता



अविनाश कुमार

कृषि



विवेक कुशवाहा



बलिन्दर

सामुदायिक रंगमंच



आशुतोष मिश्रा



अंशु कुमारी



रोज़ादीन आलम



विवेक कुमार सिंह



डोमा राम



संजना कुमारी



राधेशयाम शर्मा



विष्णु कुमार



दिव्या कुमारी

शिक्षा



पूजा कुमारी



राजवर्धन



मधुबाला देवी



सुधीर कुमार

सामुदायिक खेल



मिथिलेश कुमार सिंह



अभिमन्यु सिंह



राजकेश्वर कुमार



अरविन्द कुमार



आशा कुमारी



प्रियंका कुमारी

महिला समाख्या



अनिल चन्द्र झा



कविता देवी



किरण देवी



मीना देवी



सुशीला देवी



रज़िया खातून



चंदा देवी



सविता देवी



तारा देवी



आरती देवी



सरिता गुप्ता

आजीविका एवं शिल्प



सुकेश कुंडू



सुधीर कुमार



गौरव मौर्या



दिग्विजय सिंह

गीता देवी

शंकर पंडित

भगवान प्रसाद

सनोज कुमार



TAKSHILA Expression of Knowledge | PARIVARTAN Takshila's Grassroots Movement | ARTHSHILA Takshila's Collective for the Arts | EKTARA Takshila's World of Imagination | PAHAL Takshila's Initiative for Sports

पटना। पुणे। लुधियाना। कोयम्बटूर

पिछले 23 वर्षों से तक्षशिला संस्थान, सामाजिक समानता, समरसता एवं विकास के ध्येय को ले अपने कार्यों को संचालित कर रहा है। शिक्षा, कला, साहित्य एवं ग्रामीण विकास की पहल हेतु चार विद्यालयों-डीपीएस पटना-बिहार, डीपीएस पुणे-महाराष्ट्र, डीपीएस लुधियाना-पंजाब एवं डीपीएस कोयम्बटूर-तमिलनाडु की स्थापना हुई है और गाँव नरेन्द्रपुर में स्थापित परिवर्तन, तक्षशिला की समेकित ग्रामीण विकास पहल है। भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रकाशित एवं प्रोत्साहित करने हेतु भोपाल-मध्यप्रदेश में इकतारा की स्थापना हुई है। प्लूटो, साइकिल एवं ऑर्बिट यहाँ से प्रकाशित होनेवाली बच्चों की लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिकाएं हैं। कला एवं डिजाइन को समर्पित तक्षशिला के नए संस्थान-अर्थशिला सेंटर फॉर आर्ट शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल एवं अर्थशिला सेंटर फॉर आर्ट अहमदाबाद, गुजरात, 2022 में अर्थशिला सेंटर फॉर आर्ट, ओखला, नई दिल्ली, 2023 में कला रसिकों के लिए खुल गए हैं। अर्थशिला-पटना बिहार सभी रसिकों के स्वागत की तैयारी में है।

गाँव और पोस्ट ऑफिस नरेन्द्रपुर, ब्लॉक जीरादेई, सिवान 841 446, बिहार (भारत)
ई मेल : info@parivartanbihar.org। दूरभाष : +91 84341 70118

मुख्य कार्यालय
सी–404, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली 110 024। दूरभाष : +91 11 4155 5418/5428

/parivartanbihar | /parivartanbihar | /ParivartanBihar | www.parivartanbihar.org